www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

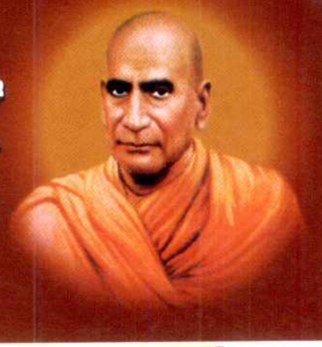

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

माघ वि. स. २०७३ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०४ • अंक : २ • फरवरी २०१७

## "गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने एन.डी.ए. में रचा इतिहास"

गुरुकुल के ब्रह्मचारी चिराग आर्य व आशुतोष आर्य ने एन.डी.ए. के एस.एस. बी व मेडिकल पास कर गुरुकुल सहित समस्त हरियाणा का नाम रोशन किया है। उल्लेखनीय बात यह है कि गुरुकुल के 3 में से 2 छात्र एनडीए के लिए चुने गये हैं। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह व एनडीए विंग के निदेशक कर्नल एच.एस. चौहान ने दोनों छात्रों को आशीर्वाद व शुभकामनाएं दी।

स्वामित्व :
गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119
(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)
दूरभाष: 01744-238048, 238648
E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

# गुरुकुल दर्शन

शिमला स्थित रामभवन में गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर मार्चपास्ट की सलामी लेते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

गणतंत्र दिवस समारोह के समय सुरक्षा कर्मियों को सम्मानित करते हुए आचार्य देवव्रत जी व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह

गुरुकुल आगमन पर ब्रह्मचारियों को संबोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, साथ में है गुरुकुल के प्राचार्य शमशेर सिंह जी

पालमपुर स्थित कृषि विश्वविद्यालय में एक समारोह के दौरान सम्मान प्रदान करते हुए आचार्य देवव्रत जी, साथ में है कुलपति अशोक सरियाल जी

शिमला स्थित राजभवन में एयरटेल अधिकारी के साथ 'एयरटेल पैमेंट बैंक' सेवा का शुभारम्भ करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

संविधान दिवस पर अधिवक्ता परिषद शिमला द्वारा आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड की 25वीं बैठक में अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

द्वारका में डीएवी संस्थान के कार्यक्रम में डीएवी मैनेजिंग कमेटी के प्रधान पूनम

www.thearyasamaj.org



ओ३म्

# गुरुकुल दर्शन


## 'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत (महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक : राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक : भोपाल सिंह आर्य
: अशोक कुमार


## आवश्यक सूचनाएं

1. '**गुरुकुल दर्शन**' मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

**– संपादक**

## अनुक्रमणिका


| क्र. | विवरण | पृ.सं. |
|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीय : गुरुकुल प्रवेश-परीक्षा | 02 |
| 2. | अहंकार की उलझी पूँछ | 03 |
| 3. | गृहस्थ धर्म : भाग-3 | 04 |
| 4. | मानव जीवन : जन्म से मोक्ष तक | 06 |
| 5. | पंडित रामचन्द्र देहलवी: मुजफ्फरनगर शास्त्रार्थ | 07 |
| 6. | व्यक्तित्व को संवारता है 'सुन्दर लेख' | 08 |
| 7. | वेदों की दृष्टि में 'अश्रद्धा' भी एक बड़ा सद्गुण है | 09 |
| 8. | एक ईश्वर की एक सृष्टि संसार के सभी मनुष्यों का एक धर्म होने का संकेत देती है | 10 |
| 9. | वेद संचेत : मर रहा जीव, जी रहा शरीर | 12 |
| 10. | गुरुकुल कुरुक्षेत्र का उत्पाद- स्पेशल च्यवनप्राश | 13 |
| 11. | गुरुकुल समाचार | 14 |
| 12. | भारत का वैदिक गणित | 15 |
| 13. | स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस | 16 |
| 14. | Human Body Facts | 18 |
| 15. | गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ | 19 |
| 16. | प्राकृतिक कृषि : लोबिया की उन्नत फसल | 20 |
| 17. | रसोई की औषधियाँ | 21 |
| 18. | गुरुकुल कुरुक्षेत्र का पुस्तकालय | 22 |
| 19. | आचार्य बलदेव जी को समर्पित कविता | 23 |
| 20. | गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय | 24 |

www.thearyasamaj.org



संपादकीय

# गुरुकुल प्रवेश-परीक्षा
# प्रतिभावान छात्रों हेतु सुनहरा अवसर

**गुरुकुल कुरुक्षेत्र** हरियाणा का नहीं अपितु समस्त भारतवर्ष का ऐसा शिक्षण संस्थान है जहाँ पर प्राचीन व आधुनिक शिक्षा के साथ बच्चों को सुसंस्कारित बनाया जाता है। यहाँ ऐसे युवा तैयार किये जाते हैं जो न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि सामाजिक बुराइयों को दूर करने की दिशा में भी अपनी महती भूमिका अदा करते हैं। लगभग 40 एकड़ के विशाल परिसर में फैला गुरुकुल कुरुक्षेत्र एकमात्र ऐसा संस्थान है जिसकी अपनी एनडीए विंग, शूटिंग रेंज व घुड़सवारी प्रशिक्षण केन्द्र है। 10वीं के बाद छात्रों के मन में भविष्य को लेकर उठने वाली शंकाओं का समाधान भी गुरुकुल कुरुक्षेत्र में है, 11वीं और 12वीं के छात्रों को गुरुकुल के अन्दर ही आई.आई.टी., पीआईएमटी व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। 5वीं से 12वीं तक विद्यालय में सभी आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित कक्षाएं हैं।

खेलों की अगर बात करें तो हाल ही में गुरुकुल के 3 ब्रह्मचारियों ने जिम्नास्टिक में राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा है। गुरुकुल की फुटबाल की जूनियन व सीनियर टीमें प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिताओं में परचम लहरा चुकी हैं। हैंडबाल, वॉलीवाल, शूटिंग में यहाँ के ब्रह्मचारी दूर-दूर तक गुरुकुल का नाम रोशन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ शिक्षा ग्रहण करने वाले ब्रह्मचारियों के उत्तम स्वास्थ्य हेतु आधुनिक गोशाला और लगभग 100 एकड़ का जैविक कृषि क्षेत्र है। गोशाला से शुद्ध और ताजा गाय का दूध, दही व घी ब्रह्मचारियों को दिया जाता है वहीं पूर्णरूप से जैविक कृषि से तैयार अन्न, दाल, सब्जियाँ ब्रह्मचारियों के भोजन में प्रयोग की जाती हैं।

वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय, भौतिक, रसासन, जीव विज्ञान, भाषा आदि की प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त दो आधुनिक तकनीक से समृद्ध कम्प्यूटर लैब हैं जिनमें छात्र विभिन्न गतिविधियों से प्रत्यक्ष होते हैं और तकनीकि का भरपूर उपयोग करते हैं। बच्चों को अपने घर से दूर माँ-बाप के स्नेह की कमी न रहे इसके लिए लगभग 20 संरक्षक ब्रह्मचारियों की दिनचर्या में सहयोग करते हैं। बच्चों को किस समय उठना है, किस समय स्नान करना है, किस समय विद्यालय जाना है, किस समय भोजन करना है, किस समय खेलना है, किस समय स्वाध्याय करना है और किस समय सोना है यह सभी अनुशासन और नियम के अंतर्गत संरक्षकों की देखरेख में होता है। इसके अतिरिक्त अलग-अलग विषयों के कुशल, अनुभवी व अपने क्षेत्र के धुरंधर शिक्षक विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देते हैं और जटिल से जटिल प्रश्नों को रुचिपूर्ण और बहुत आसान ढंग से हल करके बताते हैं। बच्चों का पूरा ध्यान पढ़ाई पर केन्द्रित रहे इसके लिए पूरे परिसर में मोबाइल फोन, टेलीविजन आदि प्रतिबंधित है। यही कारण है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पढ़ने वाले छात्रों का परीक्षा परिणाम हमेशा श्रेष्ठ रहता है। पिछले लगभग 10 वर्षों से गुरुकुल कुरुक्षेत्र का परीक्षा परिणाम न केवल शत-प्रतिशत रहा है। यहाँ के छात्र या तो योग्यता श्रेणी प्राप्त करते हैं या फिर प्रथम श्रेणी है, द्वितीय या तृतीय श्रेणी गुरुकुल कुरुक्षेत्र के विद्यार्थी की आती ही नहीं। यही कारण है कि प्रतिवर्ष गुरुकुल में प्रवेश के लिए छात्रों में होड़ सी लगती है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रवेश हेतु छात्रों के लिए सुनहरा अवसर आया है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल की लगभग 350 स्थानों के लिए 26 मार्च को प्रवेश-परीक्षा ली जाएगी। प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन-प्रक्रिया चल रही है जो 15 मार्च तक चलेगी। गुरुकुल में अपने बच्चें का प्रवेश कराने के इच्छुक अभिभावकों के लिए यह सुनहरी मौका है, वे शीघ्र अतिशीघ्र आवेदन फार्म भरकर अपने बच्चे से परीक्षा दिलवायें। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की तर्ज पर व आचार्य देवव्रत जी के कुशल मार्गदर्शन में गत वर्ष आरम्भ हुए गुरुकुल नीलोखेड़ी हेतु भी प्रवेश प्रारम्भ है, जिसके लिए प्रवेश परीक्षा 26 मार्च को गुरुकुल प्रांगण में ही होगी। योग्यता श्रेणी प्राप्त छात्रों को ही गुरुकुल में प्रवेश दिया जाएगा, बच्चे की अच्छी तैयारी करवाना भी अभिभावकों का दायित्व है। समय रहते अपने बच्चे का आवेदन पत्र भरवायें और परीक्षा की अच्छी तैयारी करवायें ताकि वह गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर अपना

\- कुलवंत सिंह सैनी

www.thearyasamaj.org



# अहंकार की उलझी पूंछ

**आचार्य सत्यप्रकाश**
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

**गतांक से आगे...** गोसो थोड़े से बुद्धत्व को प्राप्त लोगों में से एक हैं। एक दिन गोसो ने अपने शिष्यों से कहा-'एक भैंस उस आंगन से बाहर निकल गयी जिसमें की वह कैद थी। उसने आंगन की दीवार तोड़ डाली है। उसका पूरा शरीर ही दीवार से बाहर निकल गया। सींग, सिर, पैर, धड़ सब लेकिन पूंछ बाहर नहीं निकल पा रही है और पूंछ कहीं उलझी हुई भी नहीं है। पूंछ को किसी ने पकड़ भी नहीं रखा है। मैं पूछता हूं-फिर भी पूंछ बाहर क्यों नहीं निकल पा रही है? शिष्य सोचने लगे और गोसो हँसने लगे। फिर उन्होंने कहा कि जिसने सोचा, उसकी पूंछ भी उलझी। शिष्य और भी विचार में खो गये। फिर गोसो ने कहा- जिसकी समझ में न आये, वह पीछे लौटकर अपनी पूंछ देखें।'

आइये, हम इस कहानी का तात्पर्य समझने की कोशिश करते हैं। गोसो ने अपने शिष्यों से कहा कि एक भैंस एक आंगन में बन्द है और वह निकलने की कोशिश करती है।

सभी कोशिश करते हैं। जहाँ बन्धन हो, वहाँ से हम निकलने की कोशिश करते हैं क्योंकि जहाँ भी बन्धन हो वहीं अहंकार को चोट लगती है। परतन्त्रता इतनी चुभती है, क्यों? क्योंकि परतन्त्रता का अर्थ है कि अब आप अपने तहत होने में समर्थ नहीं हैं। आप चाहें तो चल नहीं सकते, चाहें तो बैठ नहीं सकते। आपके अहंकार को फैलने का उपाय नहीं है इसलिए अहंकार स्वतंत्रता मांगता है।

ध्यान रहे कि अहंकार की स्वतंत्रता आत्मा की स्वतंत्रता नहीं है। अहंकार कितनी ही स्वतंत्रता चाहे, पूरी स्वतंत्रता नहीं चाह सकता। यह अहंकार की अस्मिता का विरोधाभास है।

यह थोड़ा सूक्ष्म है। इसके थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं अहंकार चाहता है कि मैं परतंत्र न रहूँ, लेकिन अहंकार दूसरों के बिना रह भी नहीं सकता, बच भी नहीं सकता। आप चाहते है कि अकेला रहूँ, लेकिन आप दूसरों के बिना जी भी नहीं सकते। अहंकार की स्थिति वैसे ही है जैसे कुछ लोग कहते हैं कि पत्नियों के साथ रहे तो मुश्किल, साथ नहीं रह सकते। उनके बिना रहना चाहें तो मुश्किल, पत्नी के बिना भी नहीं रह सकते। रहना ही असम्भव है। साथ जाते हैं तो साथ ही कठिनाइयाँ है, अलग होते हैं तो मजा ही चला जाता है। अहंकार कुछ ऐसा चाहता है कि दूसरे तो हों, लेकिन परतन्त्र न बनाये। दूसरों का मैं तो शोषण करूँ, मैं तो दूसरों को परतन्त्र बनाऊँ पर मैं स्वतंत्र बना रहूँ।

गोसो ने कहा कि भैंस बंद है आंगन में। दरवाजा खुला है, कोई जंजीरे भी नहीं पड़ी है। भैंस मुक्त होने के लिए बाहर निकलती है। सींग निकल गये, सिर निकल गया, धड़ निकल गया, सब निकल गया लेकिन पूंछ नहीं निकली और पूंछ को न कोई पकड़े है और न पूंछ बांधी गयी है।

जब दरवाजा बड़ा होगा तभी तो भैंस निकल गयी, तब उससे पूंछ क्यों नहीं निकलती? भैंस खुद ही खड़ी हो गयी होगी! पूंछ को तो कोई नहीं निकलना चाहता। आंगन में बंद थी तब तब उसने सोचा होगा स्वतंत्रता चाहिए, मुक्ति चाहिए और जब आराम से पूरी निकल गयी तभी उसको पता चला कि पूंछ भी बाहर निकल गयी, तो स्वतंत्रता का भी क्या करेंगे?

संन्यासी भाग जाता है हिमालय, पूंछ यही छूट जाती है संसार में। वहाँ बैठकर हिमालय की शिला पर भी वह सोचता है आपके बावत कि कब आओगे, कब दर्शन करोगे, कब चरणों में फूल चढ़ाओगे? वहाँ दूर हिमालय पर बैठकर भी राह देखता है कि कोई आये, कोई कहे कि आप जैसा एकांकी, आप जैसा एकान्त में वास करने वाला कोई दूसरा नहीं देखा। संसार को खबर मिलेगी कि मैं हिमालय आ गया हूँ। संसार भली भाँति जान ले कि मैंने त्याग कर दिया है। लेकिन संसार जान ले।

तो त्यागी भी अखबार में खबर देखना चाहता है, यह बड़े मजे की बात है। भैंस बाहर निकल जाती है पूंछ भीतर रह जाती है। जिस संसार का ही त्याग कर दिया, उसका अखबार न छूटा? सब छोड़ दिया लेकिन संसार पूछे आपके बावत, जाने आपके बावत, आप हैं- यह नहीं छूटा। हिमालय आकर बैठ गये हैं लेकिन मन को प्रसन्नता तभी मिलेगी, जब सारी दुनिया के कोने-कोने में लोग जान लें कि आपने संसार छोड़ दिया है। दूसरों को पता चले कि आप एकान्त में है, तभी आपको एकान्त में भी मजा आयेगा।

मैंने लुकमान की एक कहानी सुनी है। एक दिन विवाद हो रहा था और लुकमान बैठा सुन रहा था। लुकमान गरीब गुलाम था और एक सम्राट् ने उसे खरीदा था। खरीदने की घटना भी समझने जैसी है। बाजार में लुकमान बिक रहा था। दो और गुलाम उसके साथ बेचे जा रहे थे। उसमें एक सबसे सुन्दर गुलाम था। लुकमान बहुत कुरूप था। खरीदने वाले की नजर पहले तो उस पर गयी जो सुन्दर था, स्वरूप था। ।**शेष अगले अंक में....**

www.thearyasamaj.org



# गृहस्थ धर्म – भाग 3

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। 'गुरुकुल-दर्शन' पाठकों हेतु आचार्य रामदेव द्वारा लिखित 'गृहस्थ धर्म' में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस शृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

**लेखक परिचय :** आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

***गतांक से आगे...*** जिनमें से कतिपय निम्नलिखित हैं :-

वेदमनूच्याचार्य्योऽन्तेवासिनमनुशास्तिः - "सत्यं वद, धर्म चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः, आचार्याय प्रियं धनमाहत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः, सत्यान्न प्रमदिव्यम्, धर्मान्न प्रमदितव्यम्, कुशलान्न प्रमदितव्यम्, भूत्यै न प्रमदितव्यम, स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम। देवपितृकार्य्याभ्यां न प्रमदितव्यम्, मातृदेवोभव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि, यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि, ये के चास्मच्छ्रेयाँसो ब्राह्मणाः तेषां त्वयाऽऽससेन प्रश्वसितव्यम्, श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया देयम्, श्रिया देयम्, ह्रिया देयम्, भिया देयम् संविदा देयम। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् ये यत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः। अथाभ्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ता अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन् तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्, एतदनुशासनम्, एवमुपासितव्यम् एवमु चैतदुपास्यम्"। (तैत्तिरीयोपनिषत्, शिक्षाध्याय, एकादशोऽनुवाक)

अर्थात् (अपने निकट बसे हुए ब्रह्मचारी को आचार्य वेद पढ़ाकर पुनः वा अन्त में वह शिक्षा देता है) सदा सत्य बोला करो, धर्म ही का आचारण करो, स्वाध्याय अर्थात् ब्रह्म विचार वा ब्रह्मोपासना में अथवा वेदों के ब्रह्म विद्यादि विषय जो कुछ पढ़ चुके हो उसके बारम्बार पुनरावृत्ति करने में व दोहराते रहने में आलस्य न करो, आचार्य के लिए प्रिय धन लाकर अर्थात् गुरु दक्षिणा देकर ऐसा करो जिसमें प्रजा वृद्धि का सिलसिला तुमसे न टूटे अर्थात् विवाह करके सन्तानोत्पन्न करो, (उस गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी) तुम्हें सत्य के पालन में आलस्य नहीं करना चाहिए, धर्म के धारण में आलस्य नहीं करना चाहिए, जो कुशल कर्म हैं अर्थात् जिनसे तुम्हारा तथा अन्यों का कल्याण होवे ऐसे कर्मों के करने में कभी भी आलस्य नहीं करना चाहिए, जिन कर्मों से तुम्हारे व अन्यों के धनादि ऐश्वर्य बढ़ें उन्हें करने में आलस्य नहीं करना चाहिए। विद्वानों के स्वाध्याय अर्थात् ब्रह्मविचार व ब्रह्मोपासना में व वेद विषयक आत्मिक तथा प्राकृतिक विचार में तथा प्रवचन उन्हीं वेदों के पढ़ाने में व बड़ी-बड़ी वक्तृताओं द्वारा उनके आशय अर्थात् आत्मिक और प्राकृतिक विज्ञानों को हृदयंगम कराने में कभी भी आलस्य नहीं करना चाहिए।

वेद अर्थात् धार्मिक विद्वानों और पितर अर्थात् वृद्ध ज्ञानी महात्माओं की सेवादि कार्यों में कभी भी आलस्य नहीं करना

*ईश्वर प्रत्येक को भोजन देता है परन्तु उसके मुख में नहीं डालता।*

www.thearyasamaj.org



चाहिए, माता को देवता मानने वाले बनो, पिता को देवता मानने वाले बनो, आचार्य को देवता मानने वाले होवो, अतिथि को देवता मानने वाले बनो। जो बुरे कर्म हैं उन्हीं का सेवन तुम्हें करना चाहिए अन्य अर्थात् निन्दित का नहीं, हमारे भी जो उत्तम आचरण हैं उन्हीं को ग्रहण करना तुम्हें उचित है, उनसे भिन्न जो हमारे दुष्कर्म हों, उनका अनुसरण तुम्हें कभी भी करना नहीं चाहिए। हमसे इतर जो कोई अन्य वेदों के जानने वाले धार्मिक पुरुष ब्राह्मण हैं, उनको भी आसनादि सत्कारों से सेवन करके सुखी करना तुम्हें उचित है एवं उनके निकट बैठना और उनमें विश्वास करना तुम्हें उचित है। (यथासम्भव दान में संकोच न करना) श्रद्धा सहित दान देना चाहिए अर्थात् जिन महात्माओं में तुम्हारी श्रद्धा हो उनकी पूर्ति के लिए दान दो) अश्रद्धा से भी दान देना चाहिए, श्री अर्थात् प्रतिष्ठा व शोभा के विचारों से भी दान देना चाहिए, लोक लज्जा के विचार से भी दान देना चाहिए ( अर्थात् ऐसा न हो कि सर्वथा दान देने से व अत्यल्प दान देने से लोग तुम्हें कृपण कहने लगें) भय से भी दान देना चाहिए( अर्थात् कदाचित् तुमसे अनेक प्राणियों को हानि के बदले लाभ पहुंच जाए जिसका भावी फल कष्ट होगा तो उस कष्ट के भय से प्राणियों को हानि के बदले लाभ पहुंचाने के लिए तुम्हें दान देना चाहिए) अन्य दुखी मनुष्यों की आवश्यकता जानकर जब तुम्हें दुख हो तो उन प्राणियों की दुख निवृत्ति के लिए एवं अपने दुख निवृत्ति के लिए भी दान देना चाहिए। (व प्रतिज्ञा से भी दान दान चाहिए)।

यदि तुम्हें किन्हीं कर्मों के उत्तम व अनुत्तम होने के विषय में सन्देह हो किन्हीं विचारों व भावों के धार्मिक या अधार्मिक व उचित या अनुचित होने के विषय में सन्देह हो (अर्थात् कर्म, उपासना और ज्ञान विषयक संदेह उपस्थित होने पर, उस अवस्था में जो वेदवेत्ता पुरुष, विचारशील हों, चाहे वे युक्त अर्थात् गृहस्थाश्रम में लगे हुए हों, या योगी हों) अथवा अयुक्त अर्थात् गृहस्थाश्रम में न लगे हुए विरक्त संन्यासी हों, (व जो अयुक्त अर्थात् पूर्ण योगी न भी हों) जो क्रोधादि दोषों से रहित हों, जिनकी एकमात्र इच्छा धर्म की वृद्धि के लिए ही हो( उनके आचरणों को देखो) जिस विषय में तुम्हें सन्देह पड़ गया है, उस विषय में उक्त महात्माजन जिस प्रकार वर्ताव व आचरण करो, जो अभ्याख्यात् अर्थात् परम प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि, राजर्षि व धर्मपरायण सम्राटगण हो गये हैं उनके इतिहासों, चरित्रों, कर्मों व उपदेशों के विषय में यदि तुम्हें किसी प्रकार की शंका हो जाए तो उस विषय में तुम्हारे समय में जो वेदवेत्ता विचारशील पुरुष हों, चाहे वे युक्त अर्थात् गृहस्थाश्रम में लगे हुए हो अथवा अयुक्त अर्थात् गृहस्थाश्रम में न लगे हुए विरक्त संन्यासी हों, जो क्रोधादि दोषों से रहित हों, जिनकी एकमात्र इच्छा धर्म की वृद्धि के लिए हो उनके बर्तावों को देखो, उस विषय में उक्त महात्माजन जिस प्रकार बर्ताव करते हों अर्थात् जैसा मानते हो, कहते हो व करते हो तुम भी वैसा ही बर्ताव करो। वैसा ही मानो, कहो और करो। यह जो ''सत्यं वद'' आदि हम कह आए हैं यही तुम्हारे लिए मेरा आदेश है, यही तुम्हारे लिए मेरा उपदेश है, यही वैदिक धर्म का मर्म है, यही मेरी फिर भी तुम्हारे लिए आज्ञा है, इसी प्रकार वर्तते हुए धर्मानुष्ठान व परमात्मा की उपासना करनी चाहिए, निश्चय कर इसी प्रकार उक्त परमात्मा उपासनीय है।

उक्त एकादश अनुवाक में जो 'वेदमनूच्य' शब्द आता है उसका अर्थ है वेदों को पढ़ा कर और जो 'अनुशास्ति' शब्द आता है उसका अर्थ है पीछे से शिक्षा करता है। अत: स्पष्ट है कि उक्त शिक्षा वेदों के अध्ययन को समाप्त किये हुए एवं ब्रह्मचर्य्याश्रम को पूर्ण किये स्नातक ब्रह्मचारी के लिए है।

हम बड़े बल और पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि मनुष्य जाति की सभ्यता के इतिहास में इससे अधिक सुन्दर और उपयोगी उपदेश कभी किसी विश्वविद्यालय के स्नातकों को नहीं दिया गया।

इस संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली उपदेश में स्नातकों को बतला दिया जाता था कि वास्तव में स्वाध्याय से ही मनुष्य पूर्ण विद्वान् बनता है और स्नातक होने पर शिक्षा की समाप्ति नहीं होती प्रत्युत गूढ़ अन्वेषण का आरम्भ होता है, उन्हें यह भी बतला दिया जाता था कि स्नातकों से यह आशा की जाती है कि स्वाध्याय के बल से वह ब्रह्म, जीव और प्रकृति के गुणों को भली भांति समझेंगे और अपने आत्मिक विचार व उपदेशों से लोगों को आत्मिक शांति एवं प्राकृतिक अन्वेषणों मनुष्य जाति की श्रीवृद्धि के उपायों को बतलायेंगे परन्तु यह सब करते हुए भी सन्तान पालन, अतिथि सत्कारादि जो गृहस्थियों के दैनिक-कर्म हैं, उन पर भी पूरा ध्यान रखेंगे।

## कन्याओं का यज्ञोपवीत और ब्रह्मचर्य

जिन ऋषियों ने वेद की आज्ञा 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' अर्थात् ब्रह्मचर्य के द्वारा ही कन्या युवा पति को प्राप्त करे, को शिरोधार्य कर लिया तथा उन्होंने समाज के बीच घोषणा कर दी थी कि पुत्रों की तरह कन्याओं को भी ब्रह्मचर्य धारण करने का पूरा अधिकार है। प्राचीन आर्यो की वही कन्याएं विवाह योग्य मानी जाती थी जिनका ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण हो गया हो। आश्वलायन श्रौतसूत्र में स्पष्ट लिखा है-

**'समानं ब्रह्मचर्य्यम्'**

अर्थात् (पुत्र और पुत्री) दोनों का ब्रह्मचर्य धारण करने में समानाधिकार है। ***...क्रमश:***

www.thearyasamaj.org



# मानव जीवन : जन्म से मोक्ष तक

**मानव** जीवन के चार पुरुषार्थ हैं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारों की प्राप्ति से जीवन पूर्ण बनता है।

**धर्म - सत्य और न्याय का आचरण करना।**

**अर्थ - धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना।**

**काम - धर्म और अर्थ से इष्ट भोगों का सेवन करना।**

**मोक्ष - सब दुःखों तथा जन्म-मरण से छूटना।**

**जन्म-मरण :** जब जीवन का नये शरीर से संयोग होता है, तब जन्म लेना कहाता है। जीव या आत्मा या जीवात्मा के साथ मन भी शरीर में आता है। वह जीवात्मा जब उस शरीर को छोड़ता है, तब मृत्यु या मरण कहाता है। जन्म के समय नव निर्माण नहीं होता अपितु जीव अपने पूर्व जन्मों के संस्कार मन में लिये हुए नव-शरीर से संयोग करता हैं। मरण-समय में किसी का नाश नहीं होता अपितु संस्कार-युक्त मन के साथ जीव उस शरीर को छोड़ देता है। मन को साथ लिये हुए जीव अगले जन्म में प्रवेश करता है जहाँ से फिर मृत्यु को प्राप्त होता है। इस प्रकार जन्म-मरण-पुनर्जन्म-मृत्यु का चक्र मोक्ष-प्राप्ति तक चलता रहता है। वेद में कहा गया है-

**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत:।**

**(अथर्वे. 11.5.19)**

अर्थात् ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा विद्वान् लोग मृत्यु से पार हो जाते है। तात्पर्य यह है कि उनकी मृत्यु नहीं होती। यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है कि जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी। गीता का वचन है-

**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।**

**( गीता अध्याय 2, श्लोक 27)**

अर्थात् जन्म के बाद मरण और मरण के बाद पुनर्जन्म अवश्यम्भावी है। फिर मृत्यु से पार होने का क्या अर्थ है? इसका यह अर्थ है कि साधारण प्राणी के शरीर छूटने को 'मृत्यु' कहते हैं। जो मनुष्य विद्या, धर्म, सत्य, ब्रह्मचर्य, तप, परोपकार, उपासना आदि के द्वारा मोक्ष का अधिकारी हो जाता है, उसका शरीर छूटना मृत्यु नहीं, 'मोक्ष' कहलाता है।

**अच्छी-बुरी योनियाँ :** मृत्यु के बाद जीव पुनर्जन्म अर्थात् दूसरे शरीर में जाता है तो यह आवश्यक नहीं कि उसी योनि या लिंग में जाए। जो जीव इस जन्म में स्त्री है वह अगले जन्म में पुरुष, जो पुरुष है वह स्त्री, जो मनुष्य है वह भेड़ या कुछ और भी हो सकता है। वह अपने कर्म-भोग पर निर्भर करता है। जीव के पाप-पुण्य बराबर होने पर साधारण मनुष्य, पाप कम पुण्य अधिक होने पर श्रेष्ठ मनुष्य, पुण्य कम पाप अधिक होने पर गाय, कोयल, हाथी, सर्प आदि की योनियाँ और घोरातिघोर पाप होने पर वृक्ष की योनि प्राप्त होती है।

इस समय जितनी योनियाँ दिख रही है, सबके जीव मूल रूप से एक-समान हैं। बस, उनमें पुण्य-पाप, ज्ञान-अज्ञान, वासना-साधना आदि के कारण भेद हैं। अत: साधारण पुण्य वाले जीव पुण्यों को बढ़ाकर श्रेष्ठ मनुष्य, घोरतम पाप वाले जीव पापों के फल भोगकर साधारण मनुष्य, अधिक पुण्य वाले जीव पापों को बढ़ाकर बुरी योनियाँ और कोई मनुष्य पुण्य-ही-पुण्य करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

शरीर और जीव एक-दूसरे के साथ ही कर्म और भोग कर सकते है, अकेले-अकेले नहीं। कहीं शरीर हो किन्तु जीव न हो, वह जीवित शरीर धारी नहीं हो सकता। जो भी प्राणधारी, प्राणी अथवा शरीर-धारी है, उसमें जीव अवश्यमेव है। कहीं जीव हो किन्तु शरीर न हो, वहाँ कर्म या भोग नहीं हो सकता। भूत-प्रेत में विश्वास करने वाले व्यक्ति कहते हैं कि एक विशेष प्रकार की वायु में जीव होता है किन्तु शरीर नहीं होता। यह बात मिथ्या है क्योंकि शरीर न होने पर चलना, बोलना, मारना या सहायता करना जैसा कर्म और खाना, पीना, देखना, श्वास लेना या कोई अन्य भोग करना असम्भव है। जो व्यक्ति ऐसा मान लेते हैं कि मृत्यु के बाद वह स्त्री या पुरुष अतृप्त जीव बना हुआ भटक रहा है, वे भी गलती पर हैं। जीव शरीर-धारी बनकर ही कर्म-भोग कर सकता है और अच्छी-बुरी योनियों में जाना मनुष्य-देह द्वारा सम्भव है।

**मोक्ष के साधन :** शरीर नश्वर है। किसी जीव को एक शरीर एक जन्म के लिए मिलता है। अगले जन्म में उसका शरीर दूसरा होता है, मन वही रहता है। वह जीव पुण्य-पाप करता हुआ हजारों-लाखों जन्मों में अलग-अलग शरीर पाता है किन्तु उसका मन निरन्तर वही रहता है। उस जीव से यह मन मोक्ष-प्राप्ति पर छूटता है।

वेद का उपदेश है-

**स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।**
**आयु: प्राणं प्रजां पशु कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।**
**मह्मं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।। (अथर्वे 19.71.1)**

अर्थात् ईश्वर की स्तुति और वेद का अभ्यास करने वाले को आयु, बल, सन्तान, पशु, कीर्ति, ब्रह्मतेज और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

**मोक्ष से तात्पर्य है :** सब दु:खों का छूटना, जन्म-मरण के चक्र का टूटना और परमानन्द का प्राप्त होना। मोक्ष में जीव का लय नहीं

www.thearyasamaj.org



होता। लय हो जाए तो एक दिन सब जीव समाप्त हो जाये। जीव अपने स्वरूप में रहता हुआ मोक्ष का आनन्द पाता रहता है। मोक्ष के साधन निम्नलिखित हैं -

1. **विवेक** अर्थात् सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म और कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ज्ञान होना।

2. **वैराग्य** अर्थात् विवेकानुसार त्याज्य का त्याग, जड़-पूजा, तथा चेतन-आहार का तयाग, ग्राह्य का ग्रहण करना और आसक्ति न रखना।

3. **षट्क** सम्पत्ति अर्थात् छह कर्म (क) शम अर्थात् मन पर संयम, (ख) दम अर्थात् इन्द्रियों पर नियंत्रण, (ग) उपरति अर्थात् दुष्टों से दूर रहना, (घ) तितिक्षा अर्थात् शारीरिक और मानसिक सहनशीलता, (ङ.) श्रद्धा अर्थात् ईश्वर और वेद-वचन पर विश्वास, (च) समाधान अर्थात् चित्त की एकाग्रता ।

4. **मुमुक्षुत्व** अर्थात् जैसे भूखे व्यक्ति को अन्न के सिवाय कुछ न चाहिए, ऐसे ही मोक्ष की एकमात्र इच्छा रखना।

5. **ईश्वर** का ध्यान करते हुए समाधिस्थ होना।

ये मोक्ष के साधन कठिन प्रतीत होते हैं, परन्तु जैसे पाँच वर्ष का बालक किसी विशेष कार्य को करने के योग्य नहीं होता और शनै-शनै जानता-करता हुआ पचास वर्ष की अवस्था में अनेकानेक कार्यो को करने योग्य हो जाता है, ऐसे ही सब सज्जन मोक्ष के लिए निरन्तर यत्न किया करें। इससे समस्त जन मोक्ष तक पहुँच सकते हैं।

- **डॉ0 रूपचन्द्र 'दीपक'**
6105, पतजंलि योगपीठ, फेज-2, हरिद्वार

# पंडित रामचन्द्र देहलवी : मुजफ्फरनगर शास्त्रार्थ

न जाने कितने ही अखाड़े जमे जिनमें पंडित जी ने अपने प्रतिद्विंदी को चारो खाने चित्त किया। इन अखाड़ों में से एक दृश्य देखिए -

बात मुजफ्फरनगर की है। शास्त्रार्थ का आयोजन किया गया मुस्लिम साहेबान मुकाबले में थे। विपक्षियों की ओर से यह प्रस्ताव आया कि एक जज इस शास्त्रार्थ की हार-जीत के निर्णय के लिए निश्चित किया जाना चाहिए। पंडित जी ने प्रस्ताव स्वीकार किया और जज चुनने का काम भी विरोधियों को ही सौंप दिया जो अगले दिन अपने ही एक रेवरेंड जुदाह साहब को जज बनाकर ले आये। वे मुसमलान साहब के साथ ही बैठ गये।

पंडित जी ने यह देख कर चुटकी ली, एक मीठी चुटकी और कहा जनाब जुदाह साहब आप तो अभी से एक ओर झुकने लगे जितने आप उनके है, उतने मेरे भी तो हैं, आपको को बीच में बैठना चाहिए।

जुदाह साहब भूल स्वीकार करके बीच में बैठे। फिर दोनों साहेबान से जुदाह साहब ने इस आशय से कागज पर हस्ताक्षर करवाये कि वे दोनों पक्ष उन्हें जज स्वीकार करते हैं व दोनों ही पक्षों को दिया गया निर्णय स्वीकार्य होगा। हस्ताक्षर हो गया।

दृश्य देखने योग्य था। अपार भीड़ थी। जिधर देखिए उधर सिर ही सिर नजर आते थे।

एक अजीब सी खलबली मची थी, लोग प्रतीक्षा में थे कि कब घात-प्रतिघात होंगे, उत्तर-प्रत्युत्तर होंगे। आखिर वह घड़ी आ ही गयी। फुसफुसाहट बंद हुई। जैसे शेर अपने शिकार को देखकर प्रसन्न होता है और उसे सामने देखकर मन में फूला नहीं समाता, यही हाल पंडित जी का था। वह अपने विरोधी की चालों की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब वह वार करे और कब मैं इसकी चालों को विफल करूँ।

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ, पहले विरोधियों को आक्षेप करने का समय दिया गया। जो भी आक्षेप किये गये, उनका तर्कयुक्त प्रबल उत्तर दिया गया जो कुरान शरीफ और वेदों के संदर्भ वाक्यों से सजे व सबल थे। पंडित जी को अपने मुकाबले में आए हुए मौलाना के ज्ञान की थाह मिल गयी थी। अब पंडित जी की बारी आई। उन्होंने अपने प्रश्नों की बौछार से उस मौलाना की रूह बिगाड़ दी। वे बेचारे घबरा कर उखड़ गये। प्रश्नों का उत्तर न दे सके, न कोई उदाहरण दे पाये।

अब बारी थी रेवरेण्ड जुदाह साहब की। इससे पहले कि वे अपना निर्णय दे, जनसमूह अपना निर्णय दे चुका था। उनमें एक अजीब-सी हलचल थी, रोमांच था, उत्सकुता थी। वे जज का निर्णय भी सुनना चाहते थे।

जुदाह साहब के खड़े होते ही फुसफुस बंद हो गयी, पिनड्राप साइलेंस। फैसले की घड़ी बड़ी नाजुक घड़ी। फैसला इधर या उधर, धड़कन रूकने को हो गई।

बोलना शुरु किया गया-'मैंने शास्त्रार्थ सुना, मेरे आर्य पंडित ने जिस खूबी से अपना पक्ष प्रस्तुत किया, क्या खूब था वह।'' आयतों की उसमें भरमार थी। बड़े अच्छे ढंग से उन्होंने उत्तर दिया। (तालियों की गड़गड़ाहट) मेरे मुसलमान भाई तो नमूने के तौर पर भी एक आयत ना पढ़ सके ( वैदिक धर्म की जय के गगनभेदी जयकारे) मैं निर्णय देता हूँ, आर्य जीत गये, मुसलमान हार गये।

पंडित रामचन्द्र देहलवी की जय, ऋषि दयानन्द की जय, वैदिक धर्म की जय के गगनभेदी जयकारे लगाये गये। लोगां ने अपनी टोपियाँ उछाली, कुर्सियाँ उछाली। पंडित जी को अपने कंधों पर उठा लिया। मारे खुशी के लोग दीवाने हो गये। मैं समझता हूँ पंडित जी भी उस दिन अपनी जीत पर अवश्य प्रसन्न हुए होंगे। इस जीत की खुशी में पंडित जी को एक सोने का पदक किसी धनिक ने भेंट किया।

**साभार : पंडित रामचन्द्र देहलवी,**
**लेखक -प्रो राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**

www.thearyasamaj.org



# व्यक्तित्व को संवारता है 'सुन्दर लेख'

डॉ. श्यामलाल शर्मा
हिन्दी प्राध्यापक,
गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

**आदर्श** व सफल शिक्षा वही मानी जाती है, जिसके द्वारा व्यक्तित्व का विकास भी हो। अच्छे व्यक्तित्व के बिना उच्च शिक्षा भी व्यर्थ है। इसलिए शिक्षा व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण अंग है। आज जिस पर सर्वाधिक बल दिया जाता है, वह बाह्य व्यक्तित्व है। बाह्य व्यक्तित्व में वेशभूषा, स्वच्छता, वाक्‌चातुर्य व काया सौष्ठव शामिल हैं। इन सबके साथ उच्च शिक्षा, संस्कार व सुन्दर लेखन क्षमता भी हो, तो सम्पूर्ण व्यक्तित्व में निखार आ जाता है। सुन्दर लेख के बिना सुशिक्षित व्यक्ति को भी नीचा देखना पड़ता हैं। महात्मा गांधी ने भी सुलेख को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग माना है। लेख का सुन्दर न होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है।

सुन्दर अक्षर रचना को ही सुलेख नहीं कहा जा सकता। सुन्दर अक्षर रचना के साथ शुद्ध भाषा का प्रयोग भी सुलेख का अभिन्न अंग है। शिरोरेखा प्रयोग, मात्राओं की उचित बनावट व शब्दों की शुद्ध वर्तनी इन सबके मिश्रण को ही सुलेख कहा जा सकता है। प्रारम्भिक कक्षा ही लेख सुधार का सही समय है, क्योंकि प्रारम्भ में लिखने की जो आदतें, स्वच्छता व शुद्धता के संस्कार विकसित होतें है, वे भावी व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। यद्यपि सुधार का संबंध अनवरत अभ्यास व दृढ़निश्चय शक्ति पर केन्द्रित रहता है, परन्तु बाल्यकाल के संस्कार ही अच्छाई-बुराई के विकास में मूलभूत कार्य करते हैं इसलिए कुलेख को भी एक तरह से बुरी आदतों का परिणाम कहा जा सकता है। अत: लेख सुधार का सही समय प्रारम्भिक कक्षाएँ ही हैं। छोटी कक्षाओं में उचित निरीक्षण व मार्गदर्शन देकर हम बालकों के सुलेख की नींव को सुदृढ़ कर सकते हैं। निरीक्षण एवं मार्गदर्शन विद्यालय एवं घर दोनों स्तरों पर होना चाहिए।

किसी भी कार्य की सिद्धि में मन:स्थिति का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। निश्चय, स्थिरता व प्रसन्नचित होकर लिखने से लेख सुन्दर बनता है। इसके अतिरिक्त निम्न अक्षर रचना संबंधी नियमों पर ध्यान देने से लेख में सुधार अतिशीघ्र हो सकता है :-

(1) **अर्धपाई** वाले अक्षरों द, ह, ट, ठ... आदि में अर्ध पाई का प्रयोग करना।

(2) **अंतपाई** वाले अखरों प, ख, ग, घ...आदि में गोलाई और पाई पर ध्यान देकर रचना करना।

(3) मात्राओं का सुन्दर प्रयोग करना, शिरोरेखा अवश्य लगाना।

(4) ह, ट, द, क्ष... आदि सामान्यत: बनने वाले अक्षरों का अभ्यास तोड़-तोड़कर लिखकर करना।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **यथा** | ट | द | ह | ट | द | ह |
| | 1 | 2 | 3 | 1 | 2 | 3 |

**सतत** लेखन का प्रभाव भी लेख पर पड़ता है, परन्तु लेख की सुन्दरता अच्छी आदतों का ही परिणाम होती है। अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चों के लेख का सुन्दर न होना माता-पिता एवं बालक के अपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण का ही प्रतिफल कहा जा सकता है। यदि हम अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी के समुचित विकास पर ध्यान दें तो बच्चों की हिन्दी भी अच्छी हो सकती है। चंचलता, रुचि का न होना, अवहेनलापूर्ण रवैया, मन की अप्रसन्नता, पेन-पेंसिल पकड़ने के गलत तरीके, आदर्श लेखन शैली से परिचित न होना, अत्यधिक लेखन कार्य आदि लेख को प्रभावित करते हैं। अंत में, मैं सुन्दर लेख के विषय में इतना ही कहूँगा -

**''जिनके पास है सुन्दर लेख का खजाना।**
**कदमों तले है उनके सारा जमाना।।''**

## 'अंक भी बोलते हैं'

2लतराम के बेटे 100कतराम और मेरी पक्की 2स्ती थी। 10हरे के दिन हम 2नो बर100 बाद 2पहर को 1त्र हुए थे। इसलिए हम 2नो ने वि4 किया कि 10रथ के पुत्र की रामलीला देखने चलते हैं। मैंने 9कर से कार की चाबी मंगवाई। मैंने चाबी उसकी ओर ब2$^{1/2}$ और हम 2नों कार में सवार होकर 9-2-11 हो गये। बर7 का दिन था। उसने स्पीड की सुई ऊपर च2$^{1/2}$ और हम 2नों तेजी से आगे बढ़ने लगे। तभी उसके मोबाइल की घण्टी बजी और वह मोबाइल पर बात करते हुए ड्राइविंग करने लगा। उसका ध्यान बातों में लगा हुआ था कि 1 ट्रक अचानक आया और कार बेकाबू हो गयी। हमारी तो मर मिटने की 9बत हो गयी, परन्तु 100भाग्य से कार 1 पेड़ से टकरा कर रूक गयी और हम 2नों को ज्यादा चोट नहीं आयी। 2पहर को हम 2नों 2स्त घर आ गये। उस दिन हम 2नों ने ड्राइविंग करते हुए मोबाइल का प्रयोग न करने का 1-7 वि4 किया और आराम से बिस्तर पर 100 गये।

**डॉ. श्यामलाल शर्मा**

*कायर और आलसी व्यक्ति को ऐश्वर्य प्राप्त नहीं हो सकता।*

www.thearyasamaj.org



# वेदों की दृष्टि में 'अश्रद्धा' भी एक बड़ा सद्गुण है

भावेश मेरजा

**आर्यसमाज** के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' ग्रन्थ के वेदोक्त धर्म विषय प्रकरण में ऋग्वेद का अंतिम मंत्र (10.191.4) **'समानी व आकूतिः, समानमस्तु वो मनो...'** उद्धृत किया है। इस मंत्र के **'मनः'** शब्द की व्याख्या करते हुए उन्होंने शतपथ-ब्राह्मण ग्रन्थ के **'कामः संल्पो...'** (14.4) वाक्य का प्रमाण दिया है जिसमें मन के अनेक अर्थ एवं कार्यों का उल्लेख किया गया है। शतपथ के इस प्रमाण में मन के सम्बन्ध में श्रद्धा के साथ-साथ अश्रद्धा का भी उल्लेख किया है। वैसे तो इन दोनों (श्रद्धा और अश्रद्धा) को परस्पर विरुद्ध माना जाता है और इनमें श्रद्धा को सद्गुण और अश्रद्धा को दुर्गुण माना जाता है परन्तु महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ के इस प्रकरण में श्रद्धा और अश्रद्धा की व्याख्या करते हुए जो लिखा है इससे श्रद्धा की तरह अश्रद्धा का भी सकारात्मक पहलू हमारे ध्यान में आता है और श्रद्धा की तरह अश्रद्धा भी आचरणीय , ग्राह्य होती है -यह विशेष ज्ञान होता है।महर्षि ने लिखा है -

**'श्रद्धा - ईश्वरसत्यधर्मादिगुणानामुपर्यत्यन्तं विश्वासः श्रद्धा।'** अर्थात् जो ईश्वर और सत्य-धर्म आदि शुभ गुणों में निश्चय से विश्वास को स्थिर रखता है, उसे श्रद्धा जानना। **'अश्रद्धा -अनीश्वरवादाधर्माद्युपरि सर्वथा ह्यनिश्रयोऽश्रद्धा।'** अर्थात् अविद्या, कुतर्क, बुरे काम करने वाले, ईश्वर को नहीं मानने और अन्याय आदि अशुभ गुणों से सब प्रकार से अलग रहने का नाम 'अश्रद्धा' समझना चाहिए।

ऋग्वेद के उपर्युक्त मंत्र की व्याख्या करने के पश्चात् महर्षि ने इसी विषय का प्रतिपादन करते हुए यजुर्वेद (19.77) के प्रसिद्ध मंत्र **'दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः'** को उद्धृत कर इसकी व्याख्या की है। इस मंत्र में भी **'श्रद्धाम्'** और **'अश्रद्धाम्'** दोनों पद पढ़े गये हैं। महर्षि ने इन पदों की व्याख्या करते हुए लिखा है कि **'प्रजापति परमेश्वरी धर्ममुपदिशति'** अर्थात् ईश्वर मुनष्यों के लिए धर्म का उपदेश करता है।

'(अश्रद्धाम्0)
**सर्वेषां मनुष्याणामनृतेऽधर्मेऽन्यायेऽश्रद्धां कर्तुमाज्ञापयति, तथैव वेदशास्त्रप्रतिपादिते सत्ये प्रत्यक्षादिः प्रमाणैः परीक्षिते पक्षपातरहिते न्याय्ये धर्मे प्रजापतिः सर्वज्ञ ईश्वरः श्रद्धां चादधात।'**

अर्थात् (अश्रद्धाम्0) हे मनुष्य लोगों ! तुम सब दिन अनृत अर्थात् झूठ, अन्याय के करने में अश्रद्धा अर्थात् प्रीति कभी मत करो। वैसा ही (श्रद्धाम् सत्ये0) सत्य अर्थात् वेदशास्त्रोक्त और जिसकी प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से परीक्षा की गई व की जाए, वही पक्षपात से अलग न्याय रूप धर्म है, उसके आचरण में सब दिन प्रीति रखो।

उक्त बातों पर विचार करने से हमारी समझ में यह आता है कि जीवन के उत्थान के लिए श्रद्धा के साथ-साथ अश्रद्धा भी आवश्यक होती है। जैसे सद्गुणों के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए वैसे ही दुर्गुणों के प्रति अश्रद्धा का होना आवश्यक है। इसी वैदिक भाव को महर्षि पतंजलि जी ने योगदर्शन में **'वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्'** (2.33) सूत्र के माध्यम से प्रकट किया हैं जो अनिच्छनीय हैं, अनादर्श हैं, योग में बाधक हैं, उनके प्रति अप्रीति का भाव होना-अश्रद्धा होना प्रतिपक्ष भावना है। यजुर्वेद के **'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।।'** (30.3) मंत्र में दुरितों को -दुर्गण, दुर्व्यसन और दुःखों को 'परासुव' दूर रखने की जो भावना व्यक्त की गई है, उन अनिष्टों के प्रति जो विरक्ति के भाव प्रकट किये गये हैं उन्हीं को हम 'अश्रद्धा' समझ सकते हैं। ऐसे ही अथर्ववेद (6.45.1) के **'परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि। परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः।।'** मंत्र में पाप प्रवृत्ति की ओर ले चलने वाली चित्त-वृत्तियों के प्रति पायी जाने वाली तिरस्कार की भावना ऐसी ही कल्याणकारिणी अश्रद्धा ही तो है। जीवन-व्यवहार में ऐसी अश्रद्धा होनी चाहिए, वह भी श्रद्धा के सदृश्य कल्याणकारी होती है। अतः हम केवल श्रद्धालु न बने रहें, बल्कि साथ-साथ में अश्रद्धालु भी हों। वेदानुसार यही कल्याण का मार्ग है। हाँ, किसमें श्रद्धा रखनी है और किसमें अश्रद्धा-यह विवेक से निश्चय करना अति आवश्यक है।

www.thearyasamaj.org



# एक ईश्वर की एक सृष्टि संसार के सभी मनुष्यों का एक धर्म होने का संकेत देती है

मनमोहन आर्य

संसार में यह नियम देखने में आता है कि इसकी प्रत्येक वस्तु व पदार्थ किसी रचयिता के बनाने से ही बनता है। बिना किसी के बनाये संसार में स्वत: कुछ नहीं बनता है। किसान खेती करता है तो अन्न उत्पन्न होता है। फलों का वृक्ष लगायें तो फल लगेंगे व हमें मिलेंगे। हरी तरकारियां यदि किसान व हम लगायेंगे, तभी वह हमें मिलेंगी। ऐसा नहीं है कि बिना विधि विधान के कार्य के कोई वस्तु अपने आप बन जाये। संसार में हम यह भी देखते हैं कि कुछ वस्तुएं हमसे पूर्व हमारे पूर्वजों द्वारा बनायी गई हैं। हम उसका उपयोग करते हैं। कुछ हमारे समय के लोग निर्माण आदि कार्य कर रहे हैं जिनका उपयोग वर्तमान व भविष्य के लोग करेंगे। कुछ पदार्थ व वस्तुएं ऐसी भी हैं कि जिनके बनाने वाले का पता अज्ञानी, अल्पज्ञानी व पठित अधार्मिक व नास्तिक लोगों को नहीं है। जो व्यक्ति 'खाओ, पीयो और सुखी रहो' नास्तिक विचारधारा के सिद्धान्त को मानते हैं वह प्रकृति के वास्तविक रहस्यों को नहीं जान सकते। इस पर भी यदि वेद और वैदिक साहित्य का अध्ययन किया जाये तो सृष्टि की उत्पत्ति एवं सृष्टि के अनादि व नित्य पदार्थो का ज्ञान तो होता ही है, इस सृष्टि के रचयिता के स्वरूप व सृष्टि को बनाने के प्रयोजन का भी ज्ञान हो जाता है।

महाभारत काल के बाद बचे हुए लोगों के आलस्य व प्रमाद के कारण अज्ञान छा जाने से हमारे पूर्वज वैदिक ज्ञान व रहस्यों को प्राय: भूल चुके थे परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने समय में अपूर्व पुरुषार्थ करके विलुप्त वैदिक ज्ञान को प्राप्त किया और संसार में अनेकानेक रहस्यों से पर्दा हटा दिया। वेद और वैदिक साहित्य के अनुसार संसार में तीन अनादि व नित्य पदार्थो का अस्तित्व है। यह तीन पदार्थ ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। ईश्वर और जीव चेतन पदार्थ है तथा प्रकृति जड़ पदार्थ है। ईश्वर एक सर्वव्यापक, निराकार एवं सर्वातिसूक्ष्म चेतन सत्ता है। इसका स्वरूप सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता आदि है। जीवात्मा भी ईश्वर की ही तरह अनादि व नित्य है तथा अविनाशी एवं अन्तहीन है। यह जीवात्मा भी चेतन है, आकार रहित है, सूक्ष्म और अल्पज्ञ है, एकदेशी व ससीम है तथा प्रवाह से अनादि सृष्टि में शुभ व अशुभ कर्मो के बन्धनों में बंधा हुआ है। कर्म बन्धन के परिणामस्वरूप ही पुनर्जन्म में इसका अनेकानेक योनियों में जन्म होना है। अल्पज्ञता के कारण यह अविद्या से युक्त हो जाता है जिसे दूर करने का उपाय वेद एवं वैदिक ज्ञान का अध्ययन, धारण व आचरण है।

प्रकृति जड़ व संवेदनाशून्य अचेतन पदार्थ है। जड़ व अचेतन होने से इसे सुख व दु:ख नहीं होता। यह अपने मूल स्वरूप में सूक्ष्म होने सहित सत्व, रज तथा तम तीन गुणों वाली है। इस मूल प्रकृति से ही परमात्मा जो सृष्टि का निमित्त कारण है, साकार जगत् व ब्रह्माण्ड को बनाता है। इस ज्ञान को वेद व वैदिक साहित्य में पढ़कर यही निष्कर्ष निकलता है कि इस संसार में ईश्वर एक व केवल एक ही है और उसकी बनायी हुई यह रचना सृष्टि भी कारण कार्य की दृष्टि से एक ही है। यह तथ्य है कि एक रचनाकार की सभी रचनायें परस्पर पूरक ही होती है। यह वैदिक सिद्धान्त है जो वैदिक विज्ञान से पुष्ट है। हमारे बहुत से भारतीय वैज्ञानिक ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने इस सिद्धान्त को माना है। समस्त संसार इस सृष्टि को अनादि व नित्य नहीं मानता अपितु करोड़ो व कुछ अरब वर्ष पूर्व निर्मित हुई ही मानता है। अपने आप, बिना किसी अन्य चेतन ज्ञानस्वरूप सत्ता के बनाये, तो यह इस रूप में कदापि बन नहीं सकती थी। अत: संसार में एक अपौरूषेय सत्ता 'ईश्वर' सिद्ध होती है। जो व्यक्ति इस सत्य सिद्धान्त को नहीं मानते तो इसका यही अर्थ निकलता है कि वह जान कर भी अनजान हैं। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि वह अपने क्षेत्र के ज्ञानी हो सकते हैं परन्तु वेदों का अध्ययन न करने व वैदिक जीवन न जीने के कारण औश्र इसके साथ ही उनका धार्मिक मत वेद मत से इतर होने के कारण वह वैदिक सत्य मत को स्वीकार करने का साहस नहीं कर पाते।

सम्प्रति संसार में अनेकानेक मत-मतान्तर हैं जिन्हें आज मत, पंथ, सम्प्रदाय व मजहब न कहकर धर्म की ही संज्ञा दी जा रही है। इन मतों की बहुत सी मान्यतायें समान हैं और अनेक मान्यतायें परस्पर विरुद्ध भी हैं जिनसे सत्य, तर्क व युक्ति पर विचार करने पर मनुष्य के पूर्ण हित व कल्याण को सिद्ध करने वाली सिद्ध नहीं होती। ईश्वर कभी यह नहीं चाहेगा कि उसके बनाये हुए मनुष्य अनेक समूहों, मत, पन्थों व तथाकथित धर्मो को मानें। वह तो यही चाहेगा कि सभी मनुष्य उसके सृष्टि के विज्ञान, विधान व नियमों का पालन करने के साथ अपनी भ्रान्ति दूर करनके के लिए सृष्टि के

*यह जगत दैव और पुरुषार्थ पर प्रतिष्ठित है।*

www.thearyasamaj.org



आरम्भ में दिये हुए 'वेद' ज्ञान का उपयोग करें। हमारे देश में सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषियों की परम्परा रही है। ऋषि कहते ही उसे है जो ईश्वर व सृष्टि के सभी रहस्यों को सत्य-सत्य जानता हो। ऋषि की यह भी योग्यता होती है कि उसे योगाभ्यास कर ईश्वर के सत्य स्वरूप को जाना व देखा (साक्षात्, किया हुआ) समझा, अनुभव किया हुआ होता हैं उसका इस विषय का ज्ञान भ्रान्तियों से युक्त न होकर भ्रान्ति रहित होता है। वर्तमान युग के विद्वानों व वैज्ञानिकों से अधिक ज्ञान रखने वाले हमारे ऋषियों ने कभी ईश्वर के अस्तित्व व उसके ज्ञान वेद के प्रति शंका नहीं की। वेदों का महत्त्व इस कारण से भी है कि सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक जो भी वर्तमान से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व था, संसार में केवल व एकमात्र वेद मत ही प्रचलित था। अन्य वेदेतर कोई मत नहीं था। इसलिए नहीं था कि उसकी आवश्यकता ही नहीं थी। आवश्यकता इसलिए नहीं थी कि वेद मत निभ्ररान्त व सत्य ज्ञान था। यदि वेद मत में किंचित भी कमी होती तो हमारे प्राचीन ऋषि उन भ्रान्तियों को दूर कर देते। इसी कारण महाभारत काल तक वेद से इतर कोई मत संसार में उत्पन्न नहीं हुआ व हो सका। महर्षि दयानन्द (1825-1883) ने अपने अपूर्व पुरुषार्थ और अपनी उच्च यौगिक क्षमताओं से महाभारत व उससे पूर्व कालिक सत्य वैदिक मत का अनुसंधान कर उसे प्राप्त किया और उसे प्रचार से पूर्व सत्य की कसौटी पर कस कर समस्त मनुष्य जाति के कल्याण के लिए पात्र व्यक्तियों को सौंप दिया।

वैदिक धर्म ही संसार का सर्वोत्तम पूर्ण सत्य, संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने वाला संसार के सभी मनुष्यों ही नहीं अपितु सभी प्राणियों को परमात्मा की सन्तान मानने वला, सबका कल्याण चाहने व करने वाला, किसी को हेय व निम्न अथवा धर्म विरोधी मानकर उसके वध का प्रावधान न करने वाला आदि अनेकानेक गुणों से सम्पन्न है। वेद से ही हमें ईश्वर के सच्चे स्वरूप के साथ जीवात्मा और प्रकृति के सत्य स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है। अन्य मतों में यह विशेषता नहीं है कि वह अपने-अपने ग्रन्थों से ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के सत्य रहस्यों का ज्ञान करा सकें। वेदों का अध्ययन व आचरण कर ही संसार में अनेकानेक ऋषि, मुनि, राम, कृष्ण, दयानन्द, चाणक्य, युधिष्ठिर, हनुमान, भीष्म, भीम, विदुर, बाल्मीकि और वेद व्यास जी जैसे मनुष्य उत्पन्न हुए। ऐसे महापुरुषों को उत्पन्न करने की क्षमता बाद में प्रवर्तित किसी मत में नहीं हुई। लोग अपने-अपने महापुरुषों के गुणों को ही देखते है, उनको बढ़ा-चढ़ाकर मिथ्या चमत्कारों के साथ प्रस्तुत करते हैं, उनके दोषों पर ध्यान ही नहीं देते जबकि संसार में उत्पन्न हुआ प्रत्येक मनुष्य अल्पज्ञ होता है और ऋषित्व प्राप्त करने से पूर्व उसके स्वभाव, व्यवहार व आचरण में त्रुटियां व बुराइयां होना सम्भव है। यदि वह ऋषित्व को प्राप्त ही नहीं हुआ तो अज्ञान, लोभ, लोकैषणा सहित अनेक दोष इतिहास में हुए मनुष्यों में हो सकते हैं। वह काफी सीमा तक महात्मा अर्थात् महान विचारों वाले हो सकते हैं, परन्तु मनुष्य जन्म लेकर कोई पूर्ण निर्दोष तो कदापि नहीं हो सकता, यही वेदाध्ययन से अनुमान होता हैं।

इन सभी बातों को मत-मतान्तर के लोग समझने का प्रयास ही नहीं करते। इसी कारण मनुष्यों का एक धर्म, सत्य व मानव व वैदिक धर्म होते हुए भी वह संसार में स्थापित होकर सबके द्वारा स्वीकार नहीं किया जा रहा है। यह निश्चित है कि ईश्वर व उसकी सृष्टि एक है तथा उसके द्वारा स्वीकार्य मान्य, प्रोत्साहित मानव जीवन के आचरण के नियम व गुण, जो धर्म संज्ञक है, वह भी एक ही होते हैं व होने चाहिए। उनमें भिन्नता कदापि नहीं हो सकती। दो परस्पर भिन्न व पृथक मान्यतायें, सिद्धान्त व आचरण सत्य व अच्छे नहीं हो सकते। सत्य एक ही होता है। वह धर्म रूपी सत्य योग की समाधि अवस्था को प्राप्त होकर तथा वेद व वैदिक साहित्य का अध्ययन कर ही निश्चित किया जा सकता है। जो लोग वेदाध्ययन और योग के अध्यान व समाधि से दूर हैं, वह ईश्वर के समस्त सत्य नियमों को जान नहीं सकते। इसके लिए स्वार्थत्याग व पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सत्यान्वेषण व सत्य का अनुसंधान करता आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने यही कार्य किया था जिसका परिणाम वेद व वेदानुकूल मान्यतायें हैं। यही वस्तुत: ईश्वर प्रदत्त व ईश्वर द्वारा स्वीकार्य धर्म हैं। लोग मानें या न मानें, अपनी मान्यतायें कोई कुछ भी निर्धारित कर लें परन्तु जिस प्रकार सत्य एक होता है उसी प्रकार धर्म भी एक ही होता हैं किसी के मानने व न मानने से धर्म बदलता नहीं है। जो मनुष्य ईश्वर को इष्ट मनुष्यों के कर्त्तव्यों के विपरीत कार्य करेंगे वह अवश्य ही जन्म-जन्मान्तरों में अपने अशुभ कर्मों के फल भोगेंगे। इनका यह मनुष्य जन्म उपयोगी न होकर बेकार चला जायेगा।

ईश्वर, सृष्टि व धर्म एक ही है जिसका उपदेश ईश्वर ने वेद में किया हुआ है। आइए ! वेदाध्ययन का व्रत लेकर ईश्वर के उपदेशों को जाने और उनका आचरण कर जीवन को उन्नत बनायें और जीवन के लक्ष्य व उद्देश्य मोक्ष की ओर अग्रसर हों। सत्याचरण ही धर्म है और मोक्ष का मार्ग हैं। मनु महाराज ने धर्म के 10 लक्षण बताये है उन पर भी एक दृष्टि डाल लेते हैं वह बतों कि कि धर्म, क्षमा, इन्द्रियों का दमन, चोरी न करना, शौच व सुचिता, इन्द्रियों का संयम, उन्नत सत्यासत्य का विवेक करने वाली बुद्धि, विद्वा, सत्य का ज्ञान व उसके पालन, अक्रोध अर्थात् क्रोध पर विजय, यह 10 धर्म के लक्षण हैं। आइए ! स्वयं वेद धर्म का पालन करें और दूसरों को पालन कराने के लिए सद्भावना सहित प्रमाण, तर्क व युक्ति का सहारा लेकर प्रचार करें।

*भूमि पर पाया धर्म प्रत्येक अपने पुरुषार्थ से प्राप्त अन्न से ही जीवित रहते हैं।*

www.thearyasamaj.org



# (वेद-संचेत) मर रहा जीव, जी रहा शरीर

**परमात्मा** ने मनुष्य को अपनी श्रेष्ठ सन्तान पुत्र-प्रतिनिधि के रूप में पृथ्वी पर भेजा है। मनुष्य से अत्यन्त सूक्ष्म अथवा विशाल असंख्य प्राणी हैं। उनके समस्त क्रिया कलाप, आहार, आराम, आरक्षा और अनुप्रजनन तक सीमित हैं। उन्हें मरना पसन्द हो सकता है किन्तु इन चार-आचार में कोई बाधा पसन्द नहीं होती है। मनुष्य ही ऐसा है जिसके लिए परमेश प्रभु कहते हैं -'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' (ऋ. 10.53.6) अर्थात् केवल आकार-प्रकार से ही नहीं, मनन पूर्वक आचरण से भी तुम्हें मनुष्य बने रहना है तथा दिव्य सन्तान-प्रजा को भी बढ़ाते रहना है। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो वास्तव में वह जीवात्मा रूप में तो मर ही जाता है, भले उसका शरीर जीवित बना रहता है। परीक्षण एवं घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य के किसी अबोध बालक को पशु उठा ले गये, उसे मारा नहीं बचा रहने दिया तो वह बड़ा होकर चाल-ढाल, खानपान से मनुष्य बिल्कुल नहीं रहा, कथित पशु की प्रवृत्तिधारी बन गया। समझा उसकी मानवीयता मर गयी, शरीर जीता रह गया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का निष्कर्ष यहाँ पर उल्लेखनीय है-'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।' पर वह मरे कैसे? जब उसकी मनुर्भव-आत्मा ही मर गयी, तो शरीर ही बचा रहा है, इसका मानवीयता शून्य शरीर पशुता का परिचायक बनकर रह गया।

दैनिक हिन्दुस्तान का 'दीपावली 2016' अंक मेरे सामने है। इसके प्रधान सम्पादक माननीय शशि शेखर ने आज मानवीयता की आँखे खोलकर उसके ज्योतिर्मय चरित्र पर छा गयी कालिमा को लालिमा में बदलने का प्रयास किया है। एक महिला गुरुग्राम स्थित घर से काम पर जाने के लिए निकलती है। वह मेट्रो पकड़ने के लिए स्टेशन के अन्दर घुसती है। चारों ओर दर्जनों लोग, सीसीटीवी कैमरों की चप्पे-चप्पे पर निगाह, आसपास केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की टोली। ऐसे सुरक्षित वातावरण में वह महिला आगे बढ़ती है किन्तु तभी एक सिरफिरा उस पर चाकू से हमला कर देता है। महिला छटपटाती, मदद के लिए गुहार लगाती, पर सब व्यर्थ। सिरफिरा वही आटोरिक्शा चालक है, जिसको वह घर से स्टेशन तक आने-जाने का किराया देती थी। इसी दौरान बातचीत, जान-पहचान से वह महिला से एक पक्षीय प्यार में अंधा हो गया। पूर्वोत्तर के किसी सुदूर गाँव से आकर छोटी-मोटी नौकरी से जिन्दगी बसर करने वाली उस महिला के घर वाले क्या कभी सोच सकते थे कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में उसके साथ ऐसा होगा?

उन्होंने दूसरी हृदय विदारक घटना बिहार के मुजफ्फरपुर की बतायी। यहाँ कुछ लोगों ने राज्य सरकार में जूनियर इंजीनियर पद पर कार्यरत सरिता कुमार को उसके ही घर के सामने स्थित मकान में कुर्सी पर बांधकर जिन्दा जला दिया। पुलिस को उसकी राख व जली हुई हड्डियाँ ही मिली। सरिता की माँ ने बड़ी कठिनाई से चप्पलों के आधार पर पहचान की कि दरिन्दगी की शिकार उसकी अपनी बेटी है। इन दुर्दान्त घटनाओं से स्पष्ट होता है कि हमारी महिलाओं, बच्चों व असहाय लोगों के लिए घनी आबादी या बाजार हिंसक पशुओं से भरे जंगल से कम खतरनाक नहीं है। सोचनीय है कि ऐसे दु:खद क्षण हों, सड़क पर हो रही दुर्घटनायें हों, वहाँ उपस्थित जन पीड़ित की सहायता करना तो दूर, अपने मोबाइल के कैमरे से वीडियो बनाने में मगन हो जाते हैं। सहायता की कौन कहे, अनेक बार तो राह चलते लोग भुक्तभोगी व्यक्ति की मूल्यवान् वस्तुएं उठाकर चलते बनते हैं। सामान्यजन की बात ही क्या कहना, इस कुकृत्य को करने में वे भी पीछे नहीं रहते है जिन्हें राज्य-शासन, जन सहायता के लिए स्थायी रूप से वेतन देकर नियुक्त करती है। इस प्रकार के अवांछित व्यवहार से आपको नहीं लगता कि मानवीय तत्त्व निष्प्राण हो रहा है और पाशविक शारीरिक भोग लीला जीवन्त हो रही है।

दैनिक हिन्दुस्तान के इसी अंक के पृष्ठ 10 पर प्रकाशित एक समाचार मानवता का मान बढ़ाने को काफी हैं। मजदूर की बहादुरी से तीन बदमाश पकड़े गये। नई दिल्ली अमन विहार क्षेत्र में एक युवती से छेड़छाड़ कर रहे तीन युवकों को न केवल उसने रोका बल्कि उनसे भिड़ गया। पकड़े जाने के डर से तीनों बदमाश वहाँ से भाग खड़े हुए। युवक श्रमिक ने उनकी मोटरसाइकिल का नम्बर नोट कर पुलिस को दे दिया, जिससे वे तीनों आरोपी पकड़े गये। आजादपुर सब्जी मंडी में काम करने वाले उस साहसी युवक को पुलिस ने सम्मानित करने का निर्णय लिया है। यह माना जा सकता है कि अस्त्र-शस्त्रधारी बदमाश एक अकेले को शिकार बना सकते हैं तो मिलकर तो जोर लगाया ही जा सकता है। मोबाइल निकालकर वीडियो के फेर में न पड़कर उपस्थित सभी जन यदि हुंकार भरेंगे तो बदमाश उल्टे पाँव दौड़ते नजर आयेंगे। इसके लिए उन्हें अपने अन्दर छिपी पशुता को पछाड़कर मानवता को जागृत करना पड़ेगा। बहु प्रचलित स्वर्णिम त्रयवाक्य-सार को मनुष्य पलटने लगा है। धन सब कुछ है, वह अवश्य आये, स्वास्थ्य रहे या जाये। चरित्र किस चिड़िया का नाम है, वह उड़ गयी तो भी क्या? धन, धान्य, राष्ट्र की चकाचौध में उसे कौन निहारता है? पर इतिहास छोड़ता भी नहीं, वज्र वाक्य में घोषणा कर बैठता है-'एक लख पूत सवा लख नाती ता रावण घर दिया ना बाती'।

*पुरुषार्थ मेरे दायें हाथ में है और सफलता मेरे बायें हाथ में 'अथर्ववेद।*

www.thearyasamaj.org



वेदमाता की चेतावनी सुनेगा, माने वही बचेगा भी जचेगा भी।

उत्क्रामात: पुरुष माव पत्था मृत्यो: षड्वीशमव मुंचमान:।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्ने: सूर्यस्य संदृश:। (अथर्व. 8.1.3)

अर्थात् हे मनुष्य ! तू इस अवस्था से ऊपर उठ, नीचे मत गिर। मृत्यु की बेडी को खोलता हुआ, इस लोक में अग्नि (सद्ज्ञान) एवं सूर्य (तेजोमय उत्थान) के सन्दर्शन से मत पृथक हो। जो नहीं देख पायेगा वही उलूकयातुं (अथर्व 8.4.22) उल्लू कहलायेगा। यदि तुझे उलूक नहीं सुलोक बनना है तो 'दोषो गाय बृहद्गाय द्युमद्धेहयाथर्वण। स्तुहि देव सवितारम्।। (अथर्व 6.1.1) अर्थात् हे निश्चल-स्थिर ज्ञान गगन प्राप्ति को चाहने वाले कर्मशील पुरुष ! तू सविता देव की स्तुति कर, प्रभात को तो गाता ही है, तू रात को भी उसका गान कर, खूब गा, उस ज्ञानवान् द्युतिमान को धारण कर, उसकी आज्ञा का पालन कर। इसके लिए तुझे कुछ नया नहीं करना है, बस अनुकरण करना है। वह कैसे, जैसे वेद माता बताये। 'नृभयेमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देव: समुद्रय।। (साम. 858) अर्थात् पूर्व जन्मा माता-पिता, आचार्य योगियों के द्वारा बतलाये गये यम-नियम का पालन करते हुए तू उनका प्रेम पात्र बन, इससे तू बुद्धिमान बनेगा, राज्यैवर्श्यवान देव स्वरूप बनकर प्रजाजन का ही नहीं परमेश प्रभु की प्राप्ति का अधिकारी बन जायेगा।

गाँव से चलकर रामनाथ महानगर में अपने बाल सखा सोमनाथ से मिलने आये। अपने सखा की समृद्धि के साथ-साथ उनके महानगर व्यापी सम्मान को देखकर रामनाथ चकित रह गये। उन्होंने प्रश्न किया-भाई जी ! यह सब कुछ आपने कैसे पा लिया ? बात आयी गयी हो गई। ग्राम सखा की रोज नई-नई मांग होती थी- अपने महानगर के दर्शनीय स्थल दिखाओ। वह उन्हें दिखाते रहे। वापसी से एक दिन पूर्व उनकी अभिलाषा हुई जो अब तक न देखा हो वह दिखाइये। घूमते-घूमते वह सखा को लेकर कब्रिस्तान पहुँच गये। सखा ने विस्मयपूर्वक पूछा- आप यहाँ कहाँ ले आये ? आप जानते नहीं, यहाँ आने के लिए लोग मरते हैं। वास्तव में वह यही दर्शनीय स्थल है। मेरे धनवान एवं सम्मान के समन्वय सूचक आपके गहनतम् प्रश्न का यही उत्तर भी है श्रीमान्।

**आया है सो जायेगा राजा, रंक, फकीर।**
**कोई सिंहासन चढ़ चले, कोई बंधे जंजीर।।**
**हजारों महफिलें होंगी, हजारों कारवा होंगे।**
**जमाना हमको ढूँढेगा, न जाने हम कहाँ होंगे।।**
**सब ठाठ पड़ा रह जाएगा, जब कूच करेगा बंजारा।।**

**-देवनारायण भारद्वाज**
'वरेण्यम्' अवंतिका (प्रथम) रामघाट मार्ग
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।


स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का श्रेष्ठ उत्पाद

## स्पेशल च्यवनप्राश

**घटक द्रव्य:** बेल छाल, अरणी, अरलू, गम्भारी, पाटला, मुगदपर्णी, माषपर्णी, पीपल, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, काकड़ासिंगी, भूई आंवला, मुनक्का, जीवन्ती, पोहकर मूल, अगर गिलोय, बड़ी हरड़, बला, ऋद्धि-वृद्धि, जीवक ऋषनक, कचूर, नागरमोथा, पुनर्नवा, मेदा महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, छोटी इलायची, कमल, सफेद चन्दन, विदारीकन्द, अडूसा, काकनासा, अश्वगन्धा, शतावरी, आंवला, नागकेसर, लौंग, केसर, दालचीनी, तेजपात, वंशलोचन, शहद व देशी घी।

**मात्रा व अनुपान :** 1-1 चम्मच प्रात: सायं दूध के साथ सेवन करें।

**गुण व उपयोग :** ऋषि च्यवन ने इसका सेवन किया था और बूढ़े से जवान हो गये थे, इसलिए इसका नाम च्यवनप्राश हुआ। यह अग्नि और बल का विचार कर क्षीण व्यक्ति को इसका सेवन करना चाहिए। बालक, वृद्ध, क्षत-क्षीण, हृदय रोगी और क्षीण स्वर वाले व्यक्ति को इसका सेवन करने से काफी लाभ होता है। इसके सेवन से खांसी, श्वास, प्यास, छाती का जकड़ना, वातरोग, पित्तरोग, शुक्रदोष और मूत्रदोष, नष्ट हो जाते है। यौनशक्ति बढ़ाने में सहायक, वृद्धि, स्मरण शक्तिवर्धक है।

इससे कान्ति, वर्ण और प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा मनुष्य बुढ़ापा रहित हो जाता है। यह फेफड़ो को मजबूत कर हृदय को नई ताकत प्रदान

www.thearyasamaj.org



## जिम्नास्टिक में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने जीते 3 स्वर्ण पदक

कुरुक्षेत्र, 11 जनवरी 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने जिम्नास्टिक्स एक्रोबेटिक्स में राष्ट्रीय स्तर पर 3 स्वर्ण पदक जीतकर गुरुकुल की ख्याति में वृद्धि की है। यह जानकारी देते हुए जिम्नास्टिक्स कोच गुरदीप सिंह ने बताया कि स्कूल गेम्स फेडरेशन आफ इंडिया द्वारा 62वीं नेशनल गेम्स प्रतिस्पर्धा का आयोजन सोनीपत स्थित मोतीलाल नेहरू स्पोर्टस स्कूल में किया गया। 5 से 10 जनवरी 2017 तक चले इन नेशनल गेम्स के जिम्नास्टिक्स एक्रोबेटिक्स में गुरुकुल के ब्र. अक्षय आर्य, ब्र. उनेश आर्य तथा ब्र. अभिषेक ने स्वर्ण पदक जीतकर एक बार फिर से अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कोच गुरदीप ने बताया कि जिम्नास्टिक्स एक्रोबेटिक्स में विभिन्न प्रदेशों की 16 टीमों ने भाग लिया जिसमें हरियाणा की टीम को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। हरियाणा टीम में गुरुकुल के तीनों ब्रह्मचारी अक्षय, उनेश व अभिषेक भी शामिल रहे। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह ने जिम्नास्टिक्स कोच गुरदीप सिंह, डीपीई देवीदयाल सहित सभी ब्रह्मचारियों को मिठाई खिलाकर बधाई व आशीर्वाद दिया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

## वू शु प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के खिलाड़ियों ने जीते दो पदक

कुरुक्षेत्र, 5 जनवरी 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने उत्क्रष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तरीय वु शू प्रतियोगिता में दो पदक जीतकर गुरुकुल की ख्याति में वृद्धि की है। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के सह–प्राचार्य शमशेर सिंह ने बताया कि 2 दिवसीय हरियाणा राज्य स्तरीय वु शू प्रतियोगिता का आयोजन कुरुक्षेत्र के द्रोणाचार्य स्टेडियम में किया गया जिसमें हरियाणा के विभिन्न विद्यालयों से लगभग 250 खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कराटे कोच विजय गागट के नेतृत्व में ब्रह्मचारी लक्ष्यदीप आर्य व साहिल आर्य ने भाग लिया। ब्रह्मचारी लक्ष्यदीप आर्य ने जहाँ 56 किग्रा. भार वर्ग में रजत पदक प्राप्त किया वहीं साहिल आर्य ने 48 किग्रा. भार वर्ग में कांस्य पदक जीता। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, सह–प्राचार्य शमशेर सिंह ने दोनों छात्रों सहित कराटे कोच विजय गागट को शुभकामनाएं व आशीर्वाद दिया। वहीं गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने भी पूरे गुरुकुल परिवार को दूरभाश पर शुभकामनाएं प्रेषित की है। उन्होंने छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

## एन.एस.एस. इकाई ने निकाली 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' रैली

कुरुक्षेत्र, 12 जनवरी 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र की एन.एस.एस. इकाई के ब्रह्मचारियों आज 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' रैली निकालकर लोगों को कन्या भ्रूण हत्या न करने, लड़कियों को पढ़ाने, लड़कियों को बराबर सम्मान व अधिकार देने के लिए जागरूक किया। शिविर में एन.एस.एस. के ब्रह्मचारियों को जीवनोत्थान, समाज सेवा, व्यक्तित्व निर्माण, चरित्र निर्माण सम्बंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है साथ ही समाज में युवाओं की भूमिका और सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए उन्हें प्रेरित किया जा रहा है। 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' रैली को गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जबकि गुरुकुल के प्राचार्य शमशेर सिंह भी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। रैली गुरुकुल परिसर से आरम्भ होकर थर्ड गेट, शांति नगर, दीदार नगर, आजाद नगर, थानेसर स्टेशन, जाट धर्मशाला आदि स्थानों से होते हुए पुनः गुरुकुल प्रांगण में सम्पन्न हुई। इस दौरान एन.एस.एस. के ब्रह्मचारियों ने हाथों में 'बेटी नहीं बचाओगे, तो बहू कहाँ से लाओगे' 'गर्भ में बेटी करे पुकार, बंद करो ये अत्याचार' 'बेटा बेटी एक समान' आदि स्लोगन की पट्टिकाएं उठाए हुए थे और लोगों को जागरूक कर रहे थे।

## गणतंत्र दिवस पखवाड़े के तहत 5 किमी. दौड़े गुरुकुल के एन.सी.सी कैडेट्स

कुरुक्षेत्र, 20 जनवरी 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा आज गणतंत्र दिवस पखवाड़े के तहत 5 किमी. दौड़ लगायी गई। गुरुकुल के एन.सी.सी. अधिकारी ले. श्रवण कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि निदेशक एन.सी.सी. के निर्देश पर इस बार 19 से 25 जनवरी तक गणतंत्र दिवस पखवाड़ा मनाया जा रहा है जिसके तहत एन.सी.सी. की सभी यूनिट्स द्वारा विभिन्न कार्यक्रम संचालित किये जा रहे है। इसी प्रकार गुरुकुल कुरुक्षेत्र को 10 हरियाणा बटालियन की ओर से 5 किमी. की दौड़ का आयोजन करने का निर्देश दिया गया जिससे कि कैडेट्स, विद्यालय के छात्रों व समाज को गणतंत्र दिवस के महत्व को बताया जा सके। एन.सी.सी. के जूनियर व सीनियर कैडेट्स ने इस दौड़ में भाग लिया जिसे गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी व प्राचार्य शमशेर सिंह ने हरी झंडी देकर आरम्भ किया। इस अवसर पर प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने सभी कैडेट्स गणतंत्र दिवस का महत्त्व समझाया तथा देश व समाज के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा दी। प्राचार्य शमशेर सिंह ने कैडेट्स को देश सेवा, उच्च चरित्र व राष्ट्र निर्माण में सहयोग देने का आह्वान किया।

*उद्योगी और अप्रमादी व्यक्ति के अनुष्ठान में देवता भी सहयोगी होते हैं।*

www.thearyasamaj.org



# भारत का वैदिक गणित

**वैदिक गणित** भारत का सबसे पुराना गणित विज्ञान है। यह विज्ञान ऋषि-मुनियों ने हमें दिया था। जब लोग गिनती भी नहीं जानते थे तब हमारे वैज्ञानिक कठिन से कठिन गणनायें क्षणों में हल किया करते थे। वैदिक गणित आज भी बहुत कुछ सिखाता है। यह गणित की गणनाओं को बहुत ही कम समय में हल कर देता है। आइए, जानते है वैदिक गणित के बारे में...

**चुटकियों में बड़ी-बड़ी गणनाएँ :** भारत में कम ही लोग जानते हैं पर विदेशों में लोग मानने लगे हैं कि वैदिक विधि से गणित के हिसाब लगाने में न केवल मजा आता है, उससे आत्मविश्वास मिलता है और स्मरण शक्ति भी तेज होती है

जर्मनी में सबसे कम समय का एक नियमित टेलीविजन कार्यक्रम है विसन फोर अख्त। हिन्दी में अर्थ हुआ '**आठ के पहले ज्ञान की बातें**'। देश के सबसे बड़े रेडियो और टेलीविजन नेटवर्क एआरडी के इस कार्यक्रम में हर शाम आठ बजे होने वाले मुख्य समाचारों से ठीक पहले भारतीय मूल के विज्ञान पत्रकार रंगा योगेश्वर केवल दो मिनटों में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित किसी दिलचस्प प्रश्न का सहज-सरल उत्तर देते हैं। कुछ दिन पहले रंगा योगेश्वर बता रहे थे कि भारत की क्या अपनी कोई अलग गणित है? वहाँ के लोग क्या किसी दूसरे ढंग से हिसाब लगाते हैं?

भारत में भी कम ही लोग जानते हैं कि भारत की अपनी अलग अंक गणित है-वैदिक अंक गणित। भारत के स्कूलों में वह शायद ही पढ़ाई जाती है। भारत के शिक्षा शास्त्रियों का भी यही विश्वास है कि असली ज्ञान-विज्ञान वही है जो इंग्लैंड-अमेरिका से आता है।

**घर का जोगी जोगड़ा... :** घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध। लेकिन आन गांव वाले अब भारत की वैदिक अंक गणित पर चकित हो रहे हैं और उसे सीख रहे हैं। बिना कागज-पेंसिल या कैलकुलेटर के मन ही मन हिसाब लगाने का उससे सरल और तेज तरीका शायद ही कोई है। रंगा योगेश्वर ने जर्मन टेलीविजन दर्शकों को एक उदाहरण से इसे समझाया।

उन्होंने कहा मान लें कि हमें 889 में 998 का गुणा करना है। प्रचलित तरीके से यह इतना आसान नहीं है। भारतीय वैदिक तरीके से उसे ऐसे करेंगे -दोनों का सबसे नजदीकी पूर्णांक एक हजार है। उन्हें एक हजार में से घटाने पर मिले 2 और 111, इन दोनों का गुणा करने पर मिलेगा 222, अपने मन में इसे दाहिनी ओर लिखें। अब 889 में से उस 2 को घटाएं जो 998 को एक हजार बनाने के लिए जोड़ना पड़ा। मिला 887, इसे मन में 222 के पहले बायीं ओर लिखें। यही यानि 887222 सही गुणनफल है।

**यूनान और मिस्त्र से भी पुराना :** भारत का गणित ज्ञान यूनान और मिस्र से भी पुराना बताया जाता है। शून्य और दशमलव तो भारत की देन है ही, कहते है कि यूनानी गणितज्ञ पिथागोरस का प्रमेय भी भारत में पहले से ज्ञात था।

वैदिक विधि से बड़ी संख्याओं का जोड़-घटाना और गुणा-भाग ही नहीं वर्ग और वर्गमूल, घन और घनमूल निकालना भी संभव है। इस बीच इंग्लैंड, अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में बच्चों को वैदिक गणित सिखाने वाले स्कूल भी खुल गये हैं।

**नासा की दिलचस्पी :** ऑस्ट्रेलिया के कॉलिन निकोलस साद वैदिक गणित के रसिया है। उन्होंने अपना उपनाम जैन रख लिया है और ऑस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स प्रान्त में बच्चों को वैदिक गणित सिखाते हैं।

**उनका दावा है-** अमेरिकी अंतरिक्ष अधिकरण नासा गोपनीय तरीके से वैदिक गणित का कृत्रिम बुद्धिमता वाले रॉबोट बनाने में उपयोग कर रहा है। नासा वाले समझना चाहते हैं कि रॉबोट के दिमाग में नकल कैसे की जा सकती है ताकि रॉबोट ही दिमाग की तरह हिसाब भी लगा सके।

उदाहरण के लिए 96 गुणा 95 कितना हुआ...9120

कॉलिन निकोलस साद ने वैदिक गणित पर किताबें भी लिखी हैं। बतातें है कि वैदिक गणित कम से कम ढाई से तीन हजार साल पुरानी है। उसमें मन ही मन हिसाब लगाने के 16 सूत्र बताये गये है, जो साथ ही सीखने वाले की स्मरण शक्ति भी बढ़ाते हैं।

**चमकदार प्राचीन विद्या :** कॉलिन निकोलस साद अपने बारे में कहते हैं कि मेरा काम अंको की इस चमकदार प्राचीन विद्या के प्रति बच्चों में प्रेम जगाना है। मेरा मानना है कि बच्चों को सचमुच वैदिक गणित सीखना चाहिए। भारतीय योगियों ने उसे हजारों साल पहले विकसित किया था। आप उनसे गणित का कोई भी प्रश्न पूछ सकते थे और वे मन की कल्पना-शक्ति से देख कर फट से जवाब दे सकते थे। उन्होंने तीन हजार साल पहले शून्य की अवधारणा प्रस्तुत की और दशमलव वाला बिन्दु सुझाया। उनके बिना आज हमारे पास कम्प्यूटर नहीं होता। साद ने मानो वैदिक गणित के प्रचार-प्रसार का व्रत ले रखा है -'मैं पिछले 25 सालों से लोगों को बता रहा हूँ कि आप अपने बच्चों के लिए सबसे अच्छा काम यही कर सकते हैं कि उन्हें वैदिक गणित सिखाएँ।' इससे आत्मविश्वास, स्मरणशक्ति और कल्पनाशक्ति बढ़ती है। इस गणित के 16 मूल सूत्र जानने के बाद बच्चों के लिए हर ज्ञान की खिड़की खुल जाती है।

**साभार - राधा शर्मा**

www.thearyasamaj.org



# स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

## जगमगा रहे गद्दारों के मकबरे बेशक, दिलों में चिरागे वतन राज करते हैं।
## गफलत में भूल बैठें है हम उन्हें बेशक, उबले लहू को आज भी याद करते हैं।।

डॉ. आर. आर. डी. उपाध्याय

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक राष्ट्रपिता, युवाओं के प्रेरणा स्रोत नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म दो नदियों (काठजोडी, महानदी) के बीच बसे उड़ीसा के कटक शहर में 23 जनवरी 1897, शनिवार को माता श्रीमती प्रभा देवी की कोख से कटक नगर पालिका के गैर सरकारी चेयरमैन, सरकारी वकील एवं लोक अभियोजक राय बहादुर जानकी नाथ के यहाँ हुआ।

सुभाष चार भाई व चार बहनों में सबसे छोटे होने के कारण सभी के चहेते थे। उन्हें प्यार से सभी लोग राजा कहकर बुलाते थे। सुभाष की शिक्षा प्रोटेस्टेट यूरोपियन मिशनरी स्कूल में सन् 1902 में प्रारम्भ हुई। सन् 1909 में सुभाष ने रावेन्शा कालिजिएट स्कूल में दाखिला लिया। इसी वर्ष क्रान्तिकारी गतिविधियों में शामिल राष्ट्रभक्त खुदीराम बोस को क्रूर ब्रिटेन सरकार ने फाँसी दे दी। यह घटना सुभाष में संघर्ष एवं देशप्रेम का बीज बो गयी। 11 अगस्त 1910 को सुभाष ने शहीद खुदीराम बोस की पहली बरसी पर सभी छात्रों से व्रत रखने का आग्रह किया और क्रान्तिकारी भाषण दिया। इन्हीं दिनों सुभाष चन्द्र बोस ने स्वामी विवेकानन्द की एक पुस्तक पढ़ी जिसे पढ़कर उन्हें लगा कि जैसे जीवन का लक्ष्य ही मिल गया हो। हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के बाद वे मानव सेवा और धामिक जिज्ञासा से ग्रस्त हो चुके थे। उच्च शिक्षा के लिए सुभाष को कटक से कलकत्ता भेजा गया। 1914 की गर्मियों की छुट्टियों में वे गुरु की खोज में मथुरा, वृन्दावन, वाराणसी, हरिद्वार, ऋषिकेश, ब्रदीनाथ आदि स्थानों पर अनगिनत साधु, संन्यासियों से मिले परन्तु कोई गुरु नहीं मिला। 1915 में बारहवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की।

1916 में प्रोफेसर ई.एफ. ओटेन को भारतीय छात्रों को गाली देने पर सुभाष ने चांटा मारा जिसके परिणाम स्वरूप प्रेजीडेंसी कॉलेज से सुभाष को निकाल दिया गया। सुभाष ने कटक आकर महामारी से पीड़ित रोगियों कीसेवा प्रारम्भ कर दी। 1917 में स्कॉटिश चर्च कॉलेज कलकत्ता में पुनः प्रवेश प्राप्त किया। 1918 में कैप्टन ग्रे द्वारा दिये गये सैन्य प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने पर प्रो. ई. एफ. ऑटेन (जिन्हें सुभाष ने चांटा मारा था) ने सुभाष को नॉन कमीशन्ड ऑफिसर नियुक्त कर दिया। 1919 में कलकत्ता महाविद्यालय से बी.ए. (दर्शन) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर 15 सितम्बर 1919 को समुद्री जहाज से इंग्लैण्ड की ओर रवाना हुए तथा कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया।

सितम्बर 1920 में आई.सी.एस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त कर इतिहास रच दिया। 12 अप्रैल 1921 को आई.सी.एस से यह कहकर त्याग पत्र दे दिया कि उन्हें अंग्रेजों की गुलामी मंजूर नहीं है। 16 जुलाई 1921 को गांधी जी से मिलने के लिए बम्बई (अब मुंबई) पहुँचे। वहाँ चितरंजन दास ने उन्हें नेशनल कॉलेज का प्रधानाचार्य बना दिया। सुभाष ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक दल का गठन किया तथा बांगलार कथा का सम्पादन किया और कांग्रेस के सदस्य भी बने। 17 नवंबर 1921 में प्रिंस आफ वेस के भारत आगमन का सुभाष ने जोरदार विरोध किया। 10 दिसम्बर को सुभाष व चितरंजन दास को गिरफ्तार कर छह महीने की सजा सुनाई गयी। इसके विरोध में लगभग 25 हजार कार्यकर्ताओं ने गिरफ्तारियां दी।

13 अप्रैल 1922 को महात्मा गांधी ने गोरखपुर से चोरा-चोरी पुलिस स्टेशन पर हुई दुर्घटना की वजह से सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया जिसे बोस बाबू ने राष्ट्रीय दुर्घटना कहा। 1922 में बंगाल में भीषण बाढ़ में राहत कार्य के दौरान वे जख्मी हुए परन्तु लोकप्रियता का वह शिखर प्राप्त किया कि बंगाल के बच्चे-बच्चे की जुबां पर सुभाष का नाम आने लगा।

11 जनवरी 1923 को चितरंजन दास द्वारा स्वराज पार्टी के प्रचार का काम सुभाष को दिया गया। 1 सितम्बर 1923 को नगर निगम कलकत्ता के चुनाव में सुभाष निर्विरोध चुने गये

www.thearyasamaj.org



जिसके बाद चितरंजन दास ने सीईओ नियुक्त किया। अक्तूबर 1924 में क्रान्तिकारी गोपीनाथ ने गलती से पुलस कमीश्नर चार्ल्स समाकर (डे) नामक अंग्रेज को गोली मार दी जिसके परिणामस्वरूप गोपीनाथ को फांसी दे दी गयी। सुभाष चन्द्र बोस द्वारा उनकी सराहना करने पर सुभाष को भी गिरफ्तार कर लिया गया और कई माह तक वे जेल में बंद रहे।

16 मई 1927 को दो साल छह महीने की सजा काटने के बाद बर्मा की खतरनाक जेल से उन्हें रिहा किया गया। 1928 में गांधी से मिलने साबरमती आश्रम गये। 31 अक्तूबर 1929 को लॉर्ड इर्विन ने उपनिवेशक शासन की घोषणा कर दी जिसका कांग्रेस ने स्वागत करने के बाद सुभाष ने विरोध किया। 23 जनवरी 1930 को भारतीय राजनैतिक बलिदान दिवस पर सुभाष को एक साल की सजा सुनाई गयी। 26 जनवरी 1931 को रिहा होते ही फिर एक जुलूस का नेतृत्व करने पर सुभाष पर लाठी चार्ज हुआ। इस घटना में उनकी उंगलियाँ टूटी और छह माह का कठोर कारावास मिला। 5 माचर्रू 1931 को गांधी-इर्विन पैक्ट हुआ। जिसे सुभाष ने अभिशाप की संज्ञा दी। जिसके कारण भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को गांधी की सहमति से फांसी दी गई। 2 जनवरी 1932 को अहसयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण सुभाष को गिरफ्तार कर लिया गया। 1933 में वीना से बर्लिन, रोम और सम्पूर्ण यूरोप की यात्रा कर अप्रैल 1936 में सुभाष भारत लौटे जहां बंदरगाह पर ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

मार्च 1937 में चिन्ताजनक स्वास्थ्य के कारण उन्हें रिहा किया गया। अप्रैल 1937 में कांग्रेस मंत्रीमंडल बनाने का विरोध किया और नवंबर में पुनः यूरोप चले गये। भारत के पक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय दवाब बनाने के लिए सुभाष जब देश से बाहर थे तो उन्हें कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गाय। 1939 में गांधी के के प्रत्याशी पट्टाभीरमन रमैया के विरूद्ध सुभाष ने चुनाव जीता। तिरूपुरा अधिवेशन की 104 डिग्री बुखार में अध्यक्षता करने के कारण त्यागपत्र दे दिया। 1939 में ही फारवर्ड ब्लाक का गठन किया तथा एक साल में लगभग 1000 सभाएं की। इन सभाओं में सुभाष की लोकप्रियता गांधी से अधिक हो गयी। 3 जुलाई 1940 को कलकत्ता स्थित हॉलवेल स्मारक तोडने की घोषणा के बाद उन्हें फिर जेल भेज दिया गया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के कार्यकर्ता सड़कों पर आ गये और अंग्रेजी सरकार का यह स्मारक खुद तुड़वाना पड़ा।

29 नवंबर 1940 को जेल में भूख हड़ताल के दौरान पने जीने के अधिकार को नकारते हुए नेताजी ने बंगाल सरकार को ऐतिहासिक पत्र लिखा। जिसके बाद उन्हें जेल से तो रिहा कर दिया गया मगर घर में ही नजरबंद कर दिया। 16 जनवरी 1941 को गुप्त तरीके से वह भारत से पलायन कर गये। 28 मार्च 1941 को जोखिम से भरी बेहद खतरनाक यात्रा करते हुए नेताजी काबुल और इटली के रास्ते बर्लिन जा पहुँचे। 12 नवंबर 1941 को जर्मनी में स्वतंत्र भारत केन्द्र की स्थापना की जिसकी प्रथम बैठक में सुभाष को नेताजी कहने का निर्णय लिया और आजाद हिन्द रेडियो का शुभारम्भ सुभाष के भाषण से हुआ।

25 दिसंबर 1941 को आजाद हिन्द फौज कके पहले 15 कैडेट्स को फैकनबर्ग प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। 1 मई 1942 को सुभाष हिटलर से मिले और आजाद हिन्द सेना की स्थापना की। दिसम्बर 1942 में अपनी पत्नी व पुत्री के साथ कुछ समय सुभाष वियना में रहे और आखिरी मुलाकात के बाद बर्लिन लौट आये। 1943 में जनवरी से जून तक रबड़ की पनडुब्बी में आबिद हसन के साथ जर्मनी से जापान तक खतरनाक यात्रा की। 4 जुलाई 1943 को रास बिहारी बोस ने सुभाष को आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सौंपा। यह आजाद हिन्द फौज आजाद हिन्द सेना से अलग थी। 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर के कैटल हॉल में आजाद हिन्द फौज की घोषणा और ब्रिटेन अमेरिका के विरूद्ध युद्ध का ऐलान किया। 30 दिसम्बर को सुभाष ने अण्डमान और निकोबार पर तिरंगा फहराया और लै. कर्नल ए. डी. लोकनाथक को वहाँ का गर्वनर नियुक्त किया।

जनवरी 1944 को आजाद हिन्द फौज का मुख्यालय सिंगापुर से रंगून स्थानांतरित किया गया और आजाद हिन्द फौज ने कोहिमा पर कब्जा कर कर्नल चटर्जी को सुभाष ने गर्वनर नियुक्त किया। जून 1945 में इम्फाल फ्रंट पर घमासान युद्ध हुआ। कांग्रेस ने अंग्रेजों की मदद की और आजाद हिन्द फौज का विरोध किया। जुलाई में सिंगापुर में सुभाष द्वारा स्थापित आईएन.ए. मैमोरियल का उद्घाटन किया। 18 अगस्त 1945 को वे मक्कूरिया चले गये। विमान दुर्घटना ब्रिटिश सरकार को धोखा देने के लिए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की कूटनीति का एक अंग था जिसमें चिरागे वतन सुरक्षित बचकर मंचूरिया चले गये। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु का आज तक भी कोई प्रमाण नहीं है, हम आज भी उन्हें जिन्दाबाद कहते हैं।

www.thearyasamaj.org



# Human Body Facts

**Br Aman Arya, VII D**

♦ The heart of a young man beats 72 times in a minute.

♦ When we touch someting, we sent a message to our brain at 124 mph.

♦ It is impossible to sneeze with your eyes open.

♦ Hemoglobin is found in blood.

♦ Jupiter is the fastest planet to rotate on its axis.

♦ O blood group can recieve from every blood group.

♦ Thigh is the strongest muscles of the body.

# Introduction Of Books

**Br Rachit Arya, VI D**

Books are knowledge,
Books are friends,
Books take us far and far,
In future or in past,
To the battle of Panipat.
Or to the planet mars,
Books make us thrilled or joy,
They make us laugh or try,
Books tells us what is right,
And Always help us a guide.

# Mother

**Br Shivendra Arya, XI A**

God made a wonderful mother,
A mother who never grows old.
He made her smile of the sunshine,
And He moulded her heart of pure gold.
In her eyes he placed bright shining stars,
In her cheeks, beautiful roses you see.
God made that wonderful mother,
And He gave that dear mother to me.

# Tree

**Br Hinduttva Arya, VI D**

Trees are very important for our life. They are useful to mankind. they are very important for our survival. They consume carbon dioxide and give out oxygen. They refresh our environment. They have ornamental values also. They are beautiful to look at. They also refresh our mind. Besides of these, things they are very useful for us.

They give us fruits, paper, wood. We eat the fruits in our daily life. Paper is very important for our life. Wood is a very useful thing. It is used to make furniture.

It is also used to make railway compartments, buildings etc. thus, they are very useful for us. we should never cut trees. It stops soil erosion. Therefore, we should plant more and more trees.

**Save tree, Save earth.**

***The roots of education are bitter but, the fruits is sweet.***

www.thearyasamaj.org



# गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु* ***'गुरुकुल-दर्शन'*** *द्वारा* ***'गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ'*** *नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

**प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'**
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

**गतांक से आगे....** गुरुकुल के अध्ययन काल में गुरुजन विद्यार्थी को दण्डित करते थे, यह एक सच्चाई है। आज के विद्यालयों में, सुना है, शिक्षक द्वारा विद्यार्थी को शारीरिक दंड देना घोर दंडनीय अपराध माना जाता है। यही नहीं, माध्यमिक स्कूलों के कुछ मित्रों ने बताया कि विद्यार्थी को डाँटना-फटकारना भी, यहाँ तक आँखें तरेरकर देखना भी निषिद्ध कहा गया है। कहा जाता है कि अध्यापक विद्यार्थी को प्रेम से समझाये-बुझाये, उसमें अभ्यास के प्रति रुचि और लगन जगाये। अवश्य ही ऐसा करना विद्यार्थी की मानसिक प्रगति के लिए हितकर है तथा यही रीति आधुनिक शिक्षा-पद्धति की रीढ़ बतायी जाती है। यह एक सच होते हुए दूसरा सच यह भी है कि शिक्षा, व्यवस्था, अनुशासन, राजनीति आदि में दंड अनिवार्य होता है। दंड के बिना आदेश का पालन सरल नहीं होता। हाँ, शारीरिक दंड एक सीमा तक हो तथा किसी क्रोध या बदले की भावना से न हो।

हमारे गुरुकुल में आचार्य जी तथा अध्यापक हमें चपत, छड़ी से दंडित अवश्य करते थे किन्तु दंड के इसी भय से पढ़ाई में नियमितता, अनुशासन आदि सद्गुण आ जाते थे। हमारा अनुभव है कि गुरु द्वारा दिये गये दंड में हमें अपना हित दृष्टिगोचर होता था। पाठ याद हो जाता था। जंगल में जाकर व्याकरण के सूत्रों की जो घोखाई या रटत हमने लगायी है, वह अगले दिन के दंड के भय से। गुरु द्वारा दिये गये दंड के विषय में संस्कृत के सुभाषितकार ने सच ही कहा है-

**सामृतै पाणिभिघ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।**

अर्थात् गुरु शिष्य को अमृत भरे हाथों से दंड देते हैं। उनके हाथों में कभी भी विष लगा हुआ नहीं होता। हमारा अनुभव है कि गुरुकुलीय आचार्य द्वारा मारे गये चपत से या छड़ी से हमारा हित ही हुआ है। वे हमें यदा कदा मारते अवश्य थे किन्तु उससे दोगुना स्नेह भी देते थे। हम जब 'विद्याधिकारी' बनकर गुरुकुल से विदा होकर जा रहे थे तो इन्हीं दंड-कारक गुरुजनों के नयनों में हमने आँसू देखे हैं। उस समय हमारी आँखे भी आँसुओं से धुँधली हो जाती थी। आज दंड के अभाव में विद्यार्थियों में ज्ञान का स्तर कितना नीचे आ गया है, यह तब पता चलता है जब अध्यापक हमें बताते हैं। कि अनेक विद्यार्थी सातवीं-आठवीं कक्षा में आकर भी अंग्रेजी में अपना शुद्ध नाम तक नहीं लिख पाते। किन्तु इस अपगति का कारण एकमात्र दंड का अभाव नहीं है, बल्कि अनेक कारणों का समूह है।

गुरुकुल का पाठ्यक्रम अपना अलग पाठ्यक्रम था। इसमें संस्कृत, व्याकरण आदि के अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक गणित, विज्ञान, भूगोल, अंग्रेजी आदि विषयों का भी समावेश था। संस्कृत तथा व्याकरण पर अधिक बल दिया जाता था। सबसे विशेष बात यह थी कि अन्य विज्ञानादि विषय हिन्दी माध्यम से पढ़ाये जाते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे दूरदर्शी शिक्षा-शास्त्री ने इस रहस्य को ताड़ लिया था कि छात्रों की मानसिक एवं ज्ञान-विज्ञान की प्रगति विद्यार्थी की अपनी मातृभाषा से ही हो सकती है। इसी कारण उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में सन् 1902 से ही अंग्रेजी की दासता उतार फेंककर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाया था।

यहीं नहीं, महाविद्यालय के लिए विज्ञान के विषयों के लिए, हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकें तैयार करवायी थीं। संस्कृत तथा व्याकरण का हमारा दसवीं तक का स्तर इतना उच्च था कि हमें चौथी कक्षा में ही पूरी अष्टाध्यायी याद करा दी गयी थी। संस्कृत-व्याकरण का ग्रन्थ 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' हमें छठी कक्षा में ही पढ़ा दिया गया था, जबकि महर्षि पाणिनि के व्याकरण की काशिका-वृत्ति हमें नौवीं-दसवीं कक्षा में पढ़ा दी गयी थी। यहाँ यह स्पष्ट तथा उल्लेखित करना आवश्यक है कि गुरुकुल की इस शिक्षा-पद्धति में घोखना अथवा रटत विद्या पद्धति का ही एक आवश्यक भाग थी। अतः अष्टाध्यायी, काशिका-वृत्ति को हम विद्यार्थी समझकर नहीं, कंठाग्र किया करते थे। किन्तु उसी का परिणाम है कि बचपन की वह विद्या आज भी हमारे मस्तिष्क में आधी-अधुरी क्यों न हो, सुरक्षित है। **क्रमशः**

www.thearyasamaj.org

साभार
**सुभाष पालेकर जी**
पद्मश्री पुरस्कार विजेता
विकासक शून्य लागत आध्यात्मिक कृषि

# प्राकृतिक कृषि से कैसे लें लोबिया की उन्नत फसल

संस्कृत में '**लोभिया**' शब्द है, जिसका अर्थ है-मोहित करने वाला। लोबिया मूलरूप से भारतीय है मगर कुछ लोग कहते हैं कि लोबिया अफ्रिका से ग्रीक योद्धाओं द्वारा भारत में लाया गया।

**लोबिया** बहुत ही महत्त्वपूर्ण दलहन की फसल है जिसमें 23.4 प्रतिशत प्रोटीन, 60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट्स, 1.8 प्रतिशत फैट और प्रचुर मात्रा में केल्शियम और लोह तत्त्व पाये जाते हैं। लोबिया दो प्रकार की होती है-खड़ी ऊपर बढ़ने वाली और भूमि पर फैलने वाली। फली की लम्बाई और दाने के आकार के गुणधर्म पर लोबिया को तीन गुट में बांटा जा सकता है-

**1. पहला गुट** (भारतीय लोबिया) व्हिग्ना सिनेन्सीस-कॅटजंग - इसमें फली की लम्बाई 7.5 से 12.5 सेमी. तक होती है। दाने की लम्बाई लगभग 0.6 सेमी. होती है। यह फैलती नहीं बल्कि ऊपर बढ़ती है, दाने चौड़े भी होते हैं।

**2. दूसरा गुट** (व्हिग्ना सिमेन्सीस) - इसमें फली की लम्बाई 20 से 30 सेमी. तक होती है। दाने की लम्बाई 0.9 सेमी. तक होती है। सूखने के बाद फलियाँ ढिली नहीं पड़ती और नही फूलती है।

**3. तीसरा गुट** (व्हिग्ना सिमेन्सीस-सेस्क्वीपेन्डीस) - इसमें फली की लम्बाई 30 से 60 सेमी. तक होती है। दाने लगभग 1.2 सेमी. तक लम्बे होते हैं तथा फलियाँ ढ़िली व फुली हुई होती है।

**फसल चक्र** : लोबिया-गेहूँ-मूंग, लोबिया-आलू-उड़द, धान-सरसों-लोबिया, मक्का-आलू-लोबिया, धान-लोबिया, ज्वार-लोबिया-ओट, लोबिया-बरसीम-मक्का आदि।

**आन्तर फसलें** : लोबिया खरीफ में ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, सूरजमुखी आदि फसलों में आन्तर फसल के रूप में लेना चाहिए। भारत में लोबिया गन्ना, केला, अनार, अंगूर, पपीता, सन्तरा, मौसमी, किन्नू, आम, अमरूद आदि में आन्तर फसल के रूप में बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

**किस्में** : सी 152, एफ. एस. 68, अम्बा व्ही 16, नं. 74, व्ही 240, आर. एस. 9, आर. सी. 19, जे. सी. 5, जे. सीत्र 10, टाईप 2, टाईप 5269, गोमती, एम. जी. एस. 1, एफ. ओ. एस 42, कोकण सदाबहार, कोकण सफेद, कोकण चार चवली-1, कृष्णामनी, कणकोमनी, पी. टी. बी.-1, आदि लोबिया की प्रमुख किस्में हैं।

**बुआई का समय** : जैसे की मानसून की बारिश शुरु होती है, लोबिया की बुआई करनी चाहिए। खरीफ में जून आखिर से मध्य जुलाई तक बुआई कर सकते हैं। रबी में दक्षिणी भारत में जहां कोहरा नहीं होता अक्तूबर से नवम्बर में लोबिया बोया जाता है।

**बीज प्रमाण एवं घनजीवामृत** : अनाज उत्पादन के लिए प्रति एकड़ 10 किलो बीज तथा चारे हेतु प्रति एकड़ 16 किलो बीज डालें। बुआई के समय बीज के साथ प्रति एकड़ छाननी से छाना हुआ 100 किलो गोबर खाद, 100 किलो घनजीवामृत डालें। फसल बढ़ते समय एक दो बार घनजीवामृत प्रति एकड़ 50 किलो या जीवामृत 200 लीटर प्रति एकड़ पौधों की दो कतारों के बीच भूमि पर छिड़किये।

**जीवामृत** : सिंचन करते समय हर पानी के साथ महीने में एक या दो बार जीवामृत प्रति एकड़ 200 लीटर देते रहे।

**जीवामृत का छिड़काव** : बीज बोने के तीन सप्ताह बाद खड़ी फसल पर जीवामृत का पहला छिड़काव करे। उसके लिए प्रति एकड़ 100 लीटर पानी+5 लीटर जीवामृत मिलाकर छिड़के। पहले छिड़काव के 15 दिन बाद प्रति एकड़ 150 लीटर पानी 10 लीटर जीवामृत मिलाकर दूसरा छिड़काव करें। दूसरे छिड़काव के 15 दिन बाद प्रति एकड़ 200 लीटर पानी 20 लीटर जीवामृत मिलाकर दें। तीसरे छिड़काव के 15 दिन बाद चौथा छिडकाव प्रति एकड़ 200 लीटर पानी + 5 लीटर खट्टी छाछ मिलाकर करें।

**खरपतवार नियंत्रण** : लोबिया वैसे तो घास नियंत्रक है मगर शुरु में एक बार खरपतवार निकालना पड़ता है। समय-समय पर आन्तर जुताई करके खरपतवार निकाल दें।

**पानी व्यवस्थापन** : बारीश पर निर्भर खेती में बारिश का पानी भूमि में संग्रहित करना अत्यंत आवश्यक है। बीज बोने के तीन सप्ताह बाद पौधों की दो कतारों के बीच में से लकड़ी के हल से भूमि के ढलान से विपरीत दिशा में नालियाँ निकाले। बारीश का पानी इन नालियों में संग्रहित हो जाएगा। सिंचित लोबिया में हर 15 दिन में एक बार पानी+200 लीटर जीवामृत के साथ प्रति एकड़ दें। पानी देते समय एक नाली छोड़कर दूसरी नाली में पानी दें।

**फसल सुरक्षा** : घनजीवामृत और जीवामृत का उपयोग करने से जीरो बजट कृषि में कीट या बीमारी नहीं आती। अगर फिर भी कीट या कोई बीमारी दिखाई दे तो नीमास्त्र, ब्रह्मस्त्र, अग्नि अस्त्र, दशपर्णी अर्क, सोंठास्त्र, खट्टी छाँछ का छिड़काव करें।

**फसल कटाई एवं उत्पादन** : लोबिया 75 से 135 दिनों में पक जाती है। अच्छी तरह पकने पर फसल की कटाई कर धूप में चार-पाँच दिन सुखाएं। बाद में थ्रेसिंग कर दाने धूप में सुखाएं और भण्डाराण करें। उत्पादन की बात करें तो अच्छी फसल होने पर प्रति एकड़ दाने का उत्पादन 5-6 क्विंटल और चारा लगभग 25 क्विंटल मिलता है।

*परिश्रमी, पुरुषार्थी मनुष्य बलवान और धनवान होते हैं-इसमें संदेह नहीं।*

www.thearyasamaj.org



# रसोई की औषधियाँ

*हमारी रसोई में अनेक प्रकार की औषधियाँ होती है मगर अज्ञानतावश हम उनके गुणों को नहीं पहचान पाते। 'गुरुकुल-दर्शन' में पाठकों को रसोई में उपस्थित औषधियों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग इन औषधियों का लाभ उठा सकें। गतांक से आगे.....*

डॉ. देवेन्द्र यादव
पंचकर्म एवं आयुर्वेदाचार्य

## सौंफ

1. सौंफ खाने से मुँ की दुर्गन्ध समाप्त होती है।

2. माताओं में दुग्धवर्धक होती है।

3. पेट दर्द, बदहजमी एवं अफारा दूर करती है।

4. पेशाब की जलन दूर करती है।

5. बादाम+सौंफ+मिश्री बराबर भाग लेकर एक छोटा चम्मच प्रात: दूध के साथ लेने से स्मरण-शक्ति व आँखों की रोशनी बढ़ती है।

6. एक छोटा चम्मच सौंफ भोजन के पश्चात् खाने से बदहजमी व अफारा नहीं होता।

## हींग

1. पेट में गैस होने पर हींग अत्युत्तम है।

2. पेट के कीड़े, सिरदर्द, वायु विकारों में लाभदायक होती है

3. भूख व पाचन को ठीक करती है।

## हल्दी

1. खून को साफ करती है

2. गर्भाशय की सफाई (शोधन) करती है। स्तनों में होने वाली गांठ को ठीक करती है।

3. शीतपित्त (पित्त उछलना / चकते पड़ना) में उपयोगी होती है।

4. मधुमेह में उपयोगी व सौंदर्य के लिए प्रमुख है।

5. हल्दी, सेंधा नमक व सरसों का तेल मिलाकर सुबह-शाम मसूड़ों पर मालिश करने से मसूड़ों से खून बहना व मसूड़ों का दर्द ठीक हो जाता है।

6. चुटकी भर हल्दी चूर्ण 2 चम्मच गोमूत्र के साथ लें, त्वचा रोगों में अत्युत्तम होता है।

7. हल्दी डालकर पकाया हुआ दूध पीने से दर्द का नाश होता है व घाव जल्दी भरता है।

8. दो चम्मच कच्ची हल्दी का रस या 2 ग्राम चूर्ण गर्म पानी के साथ लेना मधुमेह रोगी के लिए लाभकारी है।

## काली मिर्च

1. सर्दी, जुकाम व दमा में उपयोगी।

2. भोजन न पचना, गैस बनना, पेट दर्द एवं पेट में कीड़े होने पर उपयोगी।

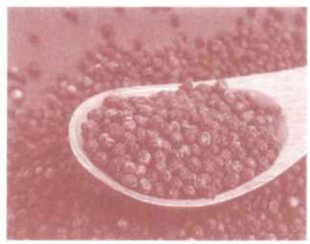

3. स्त्रियों में श्वेतप्रदर (सफेद पानी गिरना) एवं माताओं का दूध बढ़ाने में लाभकारी।

4. अदरक + शहद+ तुलसी के मिश्रण में चुटकी भर काली मिर्च मिलाकर लेना सर्दी, खांसी व जुकाम की अत्युत्तम औषधि है।

5. काली मिर्च व सौंठ चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर एक चौथाई चम्मच लेने से भूख व हाजमा ठीक रहता है।

6. चुटकी भर काली मिर्च, मक्खन व मिश्री के साथ मिलाकर खाना आँखों की रोशनी के लिए अच्छा है।

7. चुटकी भर काली मिर्च गुड़ के साथ खाने से सफेद पानी गिरना व माताओं में दूध बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

8. फुंसियों पर काली मिर्च का लेप करने से फुंसियां दब जाती है, लाभ होता है।

**पिछले** अंकों में हमने रसोई में उपलब्ध मसालों के गुणधर्म व उनसे होने वाले लाभ के बारे में बताया। रसोई में रखी इन औषधियों से हम सामान्य बीमारियों का प्राथमिक अवस्था में ही उपचार कर गंभीर रोगों से बच सकते हैं।


## आवश्यकता

**गुरुकुल कुरुक्षेत्र में नवनिर्मित आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र हेतु सुशिक्षित एवं वाद्य यंत्रों में पारंगत आर्य विद्वानों एवं आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने वाले युवाओं की आवश्यता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा, इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें :-**

**मोबाइल - 9996026304 (प्रधान जी)**

**दूरभाष - 01744-238048, 238648 (कार्यालय)**

www.thearyasamaj.org

## 13 गुरुकुल - दर्शन

*पाठकों, गुरुकुल कुरुक्षेत्र बहुआयामी स्वरूप के अंतर्गत अनेक प्रकल्पों और प्रखंडों को लेकर सब दिशाओं में उन्नति की ओर अग्रसर है। यहां प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा पद्धति में तादात्म्य स्थापित करते हुए गुरुकुल विद्यालय, वेद-वेदांगों, उपनिषदों, स्मृति-ग्रन्थों, ब्राह्मण-ग्रन्थों, अष्टाध्यायी आदि के पठन-पाठन हेतु आर्ष महाविद्यालय, उच्च कोटि का प्राकृतिक चिकित्सालय, आधुनिकतम गोशाला, अश्वशाला, एन.डी.ए अकादमी, जीरो बजट की आध्यात्मिक कृषि वाले खेत, लक्ष्य-भेद प्रशिक्षण केन्द्र, समृद्ध पौधशाला (नर्सरी), सौर ऊर्जा प्लांट, प्रयोगशालाएँ आदि इस गुरुकुल की शोभा हैं। हम गुरुकुल-दर्शन की इस श्रृंखला के अंतर्गत अपने सुधी पाठकों को बारी-बारी से सबका परिचय करा रहे हैं। इस श्रृंखला की 13वीं कड़ी के अंतर्गत हम गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पुस्तकालय के विवरण के साथ प्रस्तुत हैं :-*

# गुरुकुल कुरुक्षेत्र का पुस्तकालय

**बुद्धिजीवी** पाठकवृन्द ! आप सभी जानते हैं कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के विशाल प्रांगण में विभिन्न गतिविधियां संचालित है। गुरुकुल के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल **आचार्य देवव्रत** तथा गुरुकुल प्रबंधक समिति के **प्रधान कुलवंत सिंह सैनी** के कुशल मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र नित नये आयाम छू रहा है और शिक्षा सहित खेलों में भी गुरुकुल के खिलाड़ी ओ३म् पताका दूर-दूर तक फहरा रहे हैं। गुरुकुल में छात्रों को उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम हेतु विभिन्न प्रकार की आधुनिक सुविधाएं प्रदान की जाती है, इनमें एक महत्त्वपूर्ण अंग है पुस्तकालय। पुस्तकालय किसी भी संस्थारूपी शरीर में ज्ञानरूपी रक्त का संचार करने के लिए हृदय की तरह कार्य करता है। किसी भी विद्यालय या शिक्षण संस्थान के लिए पुस्तकालय बहुत आवश्यक है जहाँ बैठकर छात्र अपनी शंकाओं का समाधान कर सके, किताबों के माध्यम से विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त कर सके।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में दो पुस्तकालय है जो पूर्णरूप से कम्प्यूटरीकृत और आधुनिक सुविधाओं से युक्त हैं। एक पुस्तकालय जहां गुरुकुल के आर्ष महाविद्यालय में स्थित हैं, वहीं दूसरा पुस्तकालय जिसे विद्यालय का पुस्तकालय कहा जाता है, भोजनालय के ऊपर स्वामी श्रद्धानन्द छात्रावास के साथ है। आर्ष महाविद्यालय के पुस्तकालय में वेद, संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ, उपनिषद् व आर्यसमाज से संबंधित प्राचीन साहित्य व धार्मिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। विद्यालय के पुस्तकालय में छात्रों के बौद्धिक विकास व पाठ्यक्रम से संबंधित पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। पूर्णतया वातानुकूलित इस विशाल पुस्तकालय में लगभग 200 छात्रों के

बैठने की व्यवस्था है। इसमें एन.सी.ई.आर.टी की सभी पुस्तकों के अतिरिक्त आई.आईट.टी, एन.डी.ए., पी.एम.टी., एन.टी.एस.ई. आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए भी पर्याप्त मात्रा में पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। छात्रों के नैतिक उत्थान व शारीरिक उत्थान हेतु भी बहुत सा साहित्य तथा प्रेरणा हेतु महापुरुषों की जीवनियाँ भी इस पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

वर्तमान में **महावीर मलिक** की अध्यक्षता में यह पुस्तकालय चल रहा है जिसमें **सुरेश कुमार** भी उनका सहयोग करते हैं। छात्रों को अपने विषय की सम्पूर्ण जानकारी हो, इसके लिए यहाँ लगभग 25 समाचार पत्र और 100 पत्रिकाएं नियमित आती है। पुस्तकालय में पुस्तक आदि लेन-देन की प्रक्रिया कम्प्यूटरीकृत है और छात्रों को अविलम्ब उनकी मनचाही पुस्तक प्राप्त होती है। आसपास के विद्यालयों व शिक्षण संस्थानों की तुलना में गुरुकुल का पुस्तकालय काफी विशाल है जिसे समय-समय पर प्राचार्य **शमशेर सिंह** के निर्देशन में अपडेट किया जाता है।

www.thearyasamaj.org



# आचार्य बलदेव जी के स्मृति-दिवस (28 जनवरी) पर विशेष

आचार्य श्री बलदेव तुम्हें हम करते बारम्बार नमन,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।
छोड़ के दुनिया भौतिकवादी आध्यात्मिकता अपनायी,
अभियन्ता की अच्छी पदवी एक ही पल में ठुकरायी,
निकलके घर से एक बार फिर नहीं देखा उसका आंगन,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।(1)
आर्ष विद्या को पढ़ा-पढ़ाया ब्रह्मचर्य को अपनाया,
धर्म धुरन्धर शिष्य आपके जग में परचम लहराया,
वेद-धर्म की बगिया महकी, महक उठा ये सारा चमन,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।(2)
गो-हत्या पर रोक लगे ये एक ही इच्छा भारी थी,
जीवन भर की गऊ की सेवा, गऊ जान से प्यारी थी,
दिन ना देखा, रात ना देखी, सोये जगाये आर्यजन,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।(3)
त्याग, तपस्या, पावन जीवन, जीवन बड़ा निराला था,
शरण आपकी जो भी आया, पुत्र समझकर पाला था,
किया समर्पित राष्ट्र को जीवन, ऐसी लगायी उन्हें लगन,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।(4)
जब-जब पाप बढ़े धरती पर, दिव्य आत्मा आती है,
भूले भटके भ्रान्त पथिक को सन्मार्ग दिखलाती है,
मोक्ष की पदवी पाती है वों नहीं लेती दोबारा जन्म,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।(5)
जब तक सूरज चाँद में जग में, तुमको नहीं भुलायेंगे,
आर्यवीर '**संजीव**' आपकी गौरव-गाथा गायेंगे,
नाम रहेगा ऊँचा इतना जितना ऊँचा है ये गगन,
देश धर्म पर कर गये अर्पण अपना सारा तन, मन, धन।(6)

रचयिता
**संजीव कुमार आर्य**
मुख्य संरक्षक,
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

# हिन्दी

हर दिल का अरमान है हिन्दी,
भारतवर्ष की जुबान है हिन्दी,
हम सबका विश्वास है हिन्दी,
ममता का अहसास है हिन्दी।।
भारत की राष्ट्रभाषा है हिन्दी,
उज्ज्वल भविष्य की आशा है हिन्दी,
आत्मीय प्यार का इजहार है हिन्दी,
देश को बांधने वाला तार है हिन्दी।।
भारत की तस्वीर है हिन्दी,
एकता की जंजीर है हिन्दी,
हिन्दी जीवन-मूल्य और है प्रगति की शक्ति,
लोकतंत्र की रक्षिका और है राष्ट्र की अभिव्यक्ति।।

**रचना : डॉ. श्यामलाल शर्मा**

# शत शत नमन

ऋषिवर के चरणों में शत शत नमन।
गुरुवर के चरणों में शत शत नमन।।
धर्म के मर्म को सब भुलाए हुए थे,
पाखण्ड और आडम्बर छाए हुए थे,
विषयों के कोड़ों से सताए हुए थे,
अमरत्व डगर को विसराए हुए थे।
सत्यार्थ देकर सब संशोधित किया।
ऋषिवर के चरणों... गुरुवर के चरणों...
वो अकेले ही जग में विचरते रहे,
विष पीकर भी अमृत देते रहे,
भंवर में थी देश व जाति की नाव,
वो अकेले ही नैया को खेते रहे,
भारत को सिरमौर घोषित किया।
ऋषिवर के चरणों... गुरुवर के चरणों...
महिला शूद्रों का घोर अपमान था,
वेद पढ़ें न सुने ये फरमान था,
दीनहीन हो रही थी मनु की सन्तान,
हृदय में सभी के ज्यों शमशान था।
ऐसे में जन-जन को पोषित किया।
ऋषिवर के चरणों... गुरुवर के चरणों...
योगी, तपस्वी, दया के सागर थे वो,
अध्यात्म की उजली चादर थे वो,
सिन्धु से गहरे आकाश से भी ऊँचे,
दिव्य-ज्ञान 'चैतन्य' से उजागर थे वो,
वेदज्ञान देकर जग आलोकित किया,
ऋषिवर के चरणों... गुरुवर के चरणों...

**रचना : महात्मा चैतन्यमुनि**

*कामिनी और कंचन को त्यागे बिना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।*

www.thearyasamaj.org



# गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

**गुरुकुल कुरुक्षेत्र** में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार **10+2** तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2008** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही है। इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

**प्रशासनिक विभाग** : आधुनिक तीन मंजिली प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

**आर्ष महाविद्यालय** : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

**वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ** : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

**वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ** : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

**वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय** : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

**अत्याधुनिक गोशाला** : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देसी व विदेशी नस्ल की लगभग 250 गाय है जो प्रतिदिन 8 क्विंटल दूध देती हैं।

**अश्वारोहण (घुड़सवारी)**: इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

**क्लीनिकल लेबोरेट्री** : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रमाणिक जाँच की जाती है।

**शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण)**: इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी गुरुकुल ने राष्ट्र को दिये हैं।

**एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु)**: गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

**नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.)**: सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

**एन.एस.एस विंग** : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

**विशाल भोजनालय** : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

**संगीतमय फव्वारे** : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारा गुरुकुल में है।

**पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र** : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

**योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय** : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

**धन्वन्तरि चिकित्सालय** : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

**वेद प्रचार विभाग** : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त **जैविक खाद एवं कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। वहीं '**गुरुकुल-दर्शन**' मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

*कल्पलता की भाँति पृथ्वी नाना फलों को देने वाली है।*

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बैठक को संबोधित करते हुए सभा के प्रधान मा. रामपाल आर्य व उपस्थित महानुभाव

गुरुकुल आगमन पर प्रधान कुलवंत सिंह सैनी के साथ सीडीपीओ नीतू, मा. रणबीर आर्य, समरपाल आर्य, विशाल आर्य व अन्य आंगनवाड़ी कार्यकर्ता

गणतंत्र दिवस के अवसर पर गुरुकुल में ध्वजारोहण करते हुए प्रधान कुलवंत सिंह सैनी साथ में डीपीआई देवीदयाल, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य व अन्य

मतदाता दिवस पर गुरुकुल के एन.सी.सी. कैडेट्स व एन.एस.एस. कार्यकर्ताओं को राष्ट्र और समाज सेवा की शपथ दिलाते हुए प्रधान कुलवंत सिंह सैनी

पीपली स्थित माननीय ओमप्रकाश खुराना की फैक्टरी में व्यापारिक भ्रमण के समय गुरुकुल के 12वीं वाणिज्य संकाय के छात्र

गुरुकुल एयर एन.सी.सी. के कैडेट्स अधिकारी संदीप आर्य के नेतृत्व में पी.ए.बी के बाहर लोगों को ई-पैमेंट की जानकारी देते हुए

शिमला के गेयटी थियेटर में एक सांस्कृतिक समारोह में उपस्थित लोगों

ईस्माइलाबाद विद्यालय के प्राचार्य से शिविरोपन्त सम्मान प्राप्त करते हुए सचिन

www.thearyasamaj.org



# गुरुकुल-गतिविधियाँ

जिम्नास्टिक में राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतने वाले छात्रों के साथ प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह, कोच गुरदीप व डीपीई देवीदयाल जी

वु शू प्रतियोगिता में पदक जीतने वाले छात्रों के साथ गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह, कोच विजय गागट जी

गुरुकुल आगमन पर ब्र. ब्रह्मस्वरूप जी व आचार्य देवव्रत जी के साथ गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह व अन्य महानुभाव

गुरुकुल आगमन पर प्रसिद्ध उद्योगपति एवं चौ. मित्रसेन आर्य के ज्येष्ठ सुपुत्र कै. रुद्रसेन सिंधु, श्रीमती सरोज सिंधु के साथ गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य शमशेर सिंह

एन.एस.एस. इकाई द्वारा निकाली गई 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' रैली को हरी झंडी देकर रवाना करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी जी

एन. सी. सी. कैडेट्स द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के तहत 5 किमी. दौड़ को हरी झंडी देकर रवाना करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी जी

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244

Postel Regn. No. HR/KKR/181/2015-2017

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी ), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य 15 रु. एक प्रति (150 रु. वार्षिक)